

आसान हिन्दी तरजुमा

हाफिज़ नज़र अहमद



Written in Hindi by
a team of
www.understandquran.com

UNDERSTAND QUR'AN ACADEMY

Tel: 0091-6456-4829 / 0091-9908787858

Hyderabad, India

आसान तरजुमा कुरआने मजीद

तस्वीद व तरतीब : हाफिज़ नज़र अहमद

प्रिन्सिपल तालीमुल कुरआन ख़त व किताबत स्कूल, लाहौर-5

नज़र सानी

★ मौलाना अज़ीज़ जुबैदी

मुदीर मुजल्ला “अहले हदीस”, लाहौर

★ मौलाना प्रोफेसर मुज़म्मिल अहसन शेख, एम॰ ए॰

(अरबी - इस्लामियात - तारीख़)

★ मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद हुसैन नईमी

मुहतमिम जामिआ नईमिया, लाहौर

★ मौलाना मुहम्मद सरफ़राज़ नईमी अल-अज़हरी, एम॰ ए॰

फ़ाज़िल दरस-ए-निज़ामी, (अरबी - इस्लामियात)

★ मौलाना अब्दुर्रऊफ़ मलिक

ख़तीब जामअ आस्ट्रेलिया, लाहौर

★ मौलाना सईदुर्रहमान अलवी

ख़तीब जामअ मस्जिदुश शिफ़ा, शाह जमाल, लाहौर

अल्हम्दुलिल्लाह

“आसान तरजुमा कुरआन मजीद” कई एतिबार से मुन्फ़रिद है:

- हर लफ़्ज़ का जुदा जुदा तर्जुमा और पूरी आयत का आसान तर्जुमा एक्साँ है।
- यह तरजुमा तीनों मसलक के उलमा-ए-किराम (अहले सुन्नत व अल जमाअत, देव बन्दी, बरेलवी और अहले हदीस) का नज़र सानी शुदा और उन का मुत्ताफ़िकुन अलैह है।

इंशा अल्लाह

अरबी से ना वाकिफ़ भी चन्द पारे पड़ कर इस की मदद से पूरे कलामुल्लाह का तर्जुमा बखूबी समझ सकेंगे।

ऐ अललाह करीम! इस ख़िदमत को वा बरकत और वाइस-ए-ख़ैर बनादे। खुसुसन तलबह के लिए कुरआन फ़हमी और अमल विल कुरआन का ज़रिया और बन्दा के लिए फ़लाह-ए-दारैन का वसीला बनादे (आमीन).

हाफिज़ नज़र अहमद

10 रबी उस्सानी 1408 हिज़्री

3 दिसम्बर 1987

बैतुल्लाह अलहराम, मक्का मुकर्रमह

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلَى بَعْضٍ مِنْهُمْ							
उन से	बाज़	पर	उन के बाज़	हम ने फ़ज़ीलत दी	यह रसूल (जमा)		
مَنْ كَلَّمَ اللَّهَ وَرَفَعَ بَعْضُهُمْ دَرَجَتٍ ۖ وَآتَيْنَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ							
मरयम (अ) का बेटा	ईसा (अ)	और हम ने दी	दरजे	उन के बाज़	और बुलन्द किए	अल्लाह	कलाम किया
الْبَيْتِ وَيَأْتِيهِ بِرُوحِ الْقُدُسِ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَقْتَلَ الَّذِينَ							
वह जो	बाहम लड़ते	न	चाहता अल्लाह	और अगर	रुहल कुदुस (जिब्राईल) से	और उस की ताईद की हम ने	खुली निशानियां
مِنْ بَعْدِهِمْ مَنْ بَعْدَ مَا جَاءَتْهُمْ الْبَيِّنَاتُ وَلَكِنْ اخْتَلَفُوا							
उन्होंने ने इख़तिलाफ़ किया	और लेकिन	खुली निशानियां	जो (जब) आ गई उन के पास	बाद से	उन के बाद		
فَمِنْهُمْ مَنْ آمَنَ وَمِنْهُمْ مَنْ كَفَرَ ۖ وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ مَا أَقْتَلُوا							
वह बाहम न लड़ते	चाहता अल्लाह	और अगर	कुफ़ किया	कोई - बाज़	और उन से	ईमान लाया	जो - कोई फिर उन से
وَلَكِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيدُ ﴿٢٥٣﴾ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا							
तुम खर्च करो	जो ईमान लाए (ईमान वाले)	ऐ	253	जो वह चाहता है	करता है	अल्लाह	और लेकिन
مِمَّا رَزَقْنَكُمْ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَأْتِيَ يَوْمٌ لَا بَيْعَ فِيهِ وَلَا خُلَّةٌ							
और न दोस्ती	उस में	न ख़रीद ओ फ़रोख़्त	वह दिन	आजाए	कि	से पहले	हम ने दिया तुम्हें से जो
وَلَا شَفَاعَةٌ ۚ وَالْكَافِرُونَ هُمُ الظَّالِمُونَ ﴿٢٥٤﴾ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ							
सिवाए उस के	नहीं माबूद	अल्लाह	254	ज़ालिम (जमा)	वही	और काफ़िर (जमा)	और न सिफ़ारिश
الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۚ لَا تَأْخُذُهُ سِنَّةٌ وَلَا نَوْمٌ ۚ لَهُ مَا فِي السَّمَوَاتِ وَمَا							
और जो	आस्मानों में	जो	उसी का है	नीन्द	और न ऊन्ध	न उसे आती है	थामने वाला ज़िन्दा
فِي الْأَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلَّا بِإِذْنِهِ ۚ يَعْلَمُ مَا							
जो	वह जानता है	उस की इजाज़त से	मगर (बग़ैर)	उस के पास	सिफ़ारिश करे	वह जो	कौन जो ज़मीन में
بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيطُونَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهِ إِلَّا							
मगर	उस का इल्म	से	किसी चीज़ का	वह अहाता करते हैं	और नहीं	उन के पीछे	और जो उन के सामने
بِمَا شَاءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ ۖ وَلَا يَئُودُهُ حِفْظُهُمَا ۚ							
उन की हिफ़ाज़त	थकाती उस को	और नहीं	और ज़मीन	आस्मान (जमा)	उस की कुर्सी	समा लिया	जितना वह चाहे
وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيمُ ﴿٢٥٥﴾ لَا إِكْرَاهَ فِي الدِّينِ ۚ قَدْ تَبَيَّنَ الرُّشْدُ							
हिदायत	वेशक जुदा हो गई	दीन	में	नहीं ज़बरदस्ती	255	अज़मत वाला	बुलन्द मरतबा और वह
مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَكْفُرْ بِالطَّاغُوتِ وَيُؤْمِنْ بِاللَّهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ							
उस ने थाम लिया	पस तहकीक़	अल्लाह पर	और ईमान लाए	गुमराह करने वाले को	न माने	पस जो	गुमराही से
بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَىٰ ۚ لَا انْفِصَامَ لَهَا ۚ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٥٦﴾							
256	जानने वाला	सुनने वाला	और अल्लाह	उस को	टूटना नहीं	मज़बूती	हलक़े को

यह रसूल है! हम ने उन में से बाज़ को बाज़ पर फज़ीलत दी। उन में (बाज़) से अल्लाह ने कलाम किया और उन में से बाज़ के दरजे बुलन्द किए, और हम ने मरयम के बेटे ईसा (अ) को खुली निशानियां दी, और हम ने रुहल कुदुस (अ) से उस की ताईद की, और अगर अल्लाह चाहता तो वह बाहम न लड़ते जो उन के बाद हुए, उस के बाद जबकि उन के पास खुली निशानियां आगई, लेकिन उन्होंने ने इख़तिलाफ़ किया, फिर उन में से कोई ईमान लाया, और उन में से किसी ने कुफ़ किया, और अगर अल्लाह चाहता तो वह बाहम न लड़ते, लेकिन अल्लाह जो चाहता है करता है। (253)

ऐ ईमान वालो! जो हम ने तुम्हें दिया उस में से खर्च करो, इस से पहले कि वह दिन आजाए जिस में न ख़रीद ओ फ़रोख़्त होगी, न दोस्ती और न सिफ़ारिश, और काफ़िर वही ज़ालिम है। (254)

अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, ज़िन्दा, सब को थामने वाला, न उसे ऊन्ध आती है और न नीन्द, उसी का है जो आस्मानों और ज़मीन में है, कौन है जो सिफ़ारिश करे? उस के पास उस की इजाज़त के बग़ैर, वह जानता है जो उन के सामने है, और जो उन के पीछे है, और वह नहीं अहाता कर सकते उस के इल्म में से किसी चीज़ का मगर जितना वह चाहे, उस की कुर्सी समाए हुए है आस्मानों और ज़मीन को, उस को उन की हिफ़ाज़त नहीं थकाती, और वह बुलन्द मरतबा, अज़मत वाला है। (255)

ज़बरदस्ती नहीं दीन में, वेशक हिदायत से गुमराही जुदा हो गई है, पस जो गुमराह करने वाले को न माने, और अल्लाह पर ईमान लाए, पस तहकीक़ उस ने हलक़े को मज़बूती से थाम लिया, टूटना नहीं उस को, और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (256)

जो लोग ईमान लाए अल्लाह उन का मददगार है, वह उन्हें निकालता है अन्धेरो से रौशनी की तरफ, और जो लोग काफिर हुए उन के साथी गुमराह करने वाले हैं, वह उन्हें निकालते हैं रौशनी से अन्धेरो की तरफ, यही लोग दोज़खी हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (257)

क्या आप ने उस शख्स की तरफ नहीं देखा जिस ने इब्राहीम (अ) से उन के रब के बारे में झगड़ा किया कि अल्लाह ने उसे वादशाहत दी थी, जब इब्राहीम (अ) ने कहा मेरा रब वह है जो ज़िन्दा करता है और मारता है। उस ने कहा मैं ज़िन्दा करता हूँ और मारता हूँ, इब्राहीम (अ) ने कहा वेशक अल्लाह सूरज को मशरूक से निकालता है, पस तू उसे ले आ मशरूब से, तो वह काफिर हैरान रह गया, और अल्लाह नाइन्साफ़ लोगों को हिदायत नहीं देता। (258)

या उस शख्स के मानिंद जो एक बस्ती से गुज़रा, और वह अपनी छतों पर गिरी पड़ी थी, उस ने कहा अल्लाह उस के मरने के बाद उसे क्योंकर ज़िन्दा करेगा? तो अल्लाह ने उसे एक सौ साल मुर्दा रखा, फिर उसे उठाया (ज़िन्दा किया), अल्लाह ने पूछा तू कितनी देर रहा? उस ने कहा मैं एक दिन या दिन से कुछ कम रहा, उस ने कहा बल्कि तू एक सौ साल रहा है, पस तू अपने खाने पीने की तरफ देख, वह सड़ नहीं गया, और अपने गधे की तरफ देख, और हम तुझे लोगों के लिए एक निशानी बनाएंगे, और हड्डियों की तरफ देख हम उन्हें किस तरह जोड़ते हैं, फिर उन्हें गोश्त पहनाते हैं, फिर जब उस पर वाज़ेह हो गया तो उस ने कहा मैं जान गया कि अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत वाला है। (259)

اللَّهُ وَلِيُّ الَّذِينَ آمَنُوا يُخْرِجُهُم مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّورِ							
रौशनी	तरफ़	अन्धेरो	से	वह उन्हें निकालता है	जो लोग ईमान लाए	मददगार	अल्लाह
وَالَّذِينَ كَفَرُوا أُولَئِكَمُ الطَّاغُوتُ يُخْرِجُونَهُم مِّنَ النُّورِ							
रौशनी	से	और उन्हें निकालते हैं	शैतान	उन के साथी	और जो लोग काफिर हुए		
إِلَى الظُّلُمَاتِ ۚ أُولَئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢٥٧﴾							
257	हमेशा रहेंगे	उस में	वह	दोज़खी	यही लोग	अन्धेरे (जमा)	तरफ़
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ حَاجَّ إِبْرَاهِيمَ فِي رَبِّهِ أَنْ آتَاهُ اللَّهُ							
अल्लाह	उसे दी	कि	उस का रब	बारे (में)	इब्राहीम	झगड़ा किया	वह शख्स जो
الْمُلْكُ ۖ إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّيَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ قَالَ أَنَا							
मैं	उस ने कहा	और मारता है	ज़िन्दा करता है	जो कि	मेरा रब	इब्राहीम	कहा जब वादशाहत
أُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ قَالَ إِبْرَاهِيمُ فَإِنَّ اللَّهَ يَأْتِي بِالشَّمْسِ							
सूरज को	लाता है	अल्लाह	वेशक	इब्राहीम	कहा	और मैं मारता हूँ	ज़िन्दा करता हूँ
مِنَ الْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِي كَفَرَ ۚ							
जिस ने कुफ़ किया (काफिर)	तो वह हैरान रह गया	मशरूब	से	पस तू उसे ले आ	मशरूक	से	
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٢٥٨﴾ أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَى قَرْيَةٍ							
एक बस्ती	पर से	गुज़रा	उस शख्स के मानिंद जो	या	258	नाइन्साफ़ लोग	नहीं हिदायत देता और अल्लाह
وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا ۚ قَالَ أَنَّى يُحْيِي هَذِهِ اللَّهُ بَعْدَ							
बाद	अल्लाह	इस	ज़िन्दा करेगा	क्योंकर	उस ने कहा	अपनी छतों पर	गिर पड़ी थी और वह
مَوْتِهَا ۚ فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ ۚ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ							
कितनी देर रहा	उस ने पूछा	उसे उठाया	फिर	साल	एक सौ	अल्लाह	तो उस को मुर्दा रखा इस का मरना
قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۚ قَالَ بَلْ لَبِثْتَ							
तू रहा	बल्कि	उस ने कहा	दिन से कुछ कम	या	एक दिन	मैं रहा	उस ने कहा
مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ إِلَى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ ۚ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ وَانْظُرْ							
और देख	वह नहीं सड़ गया	और अपना पीना	अपना खाना	तरफ़	पस तू देख	एक सौ साल	
إِلَى حِمَارِكَ ۚ وَلِنَجْعَلَ آيَةً لِلنَّاسِ ۚ وَانْظُرْ إِلَى الْعِظَامِ							
हड्डियां	तरफ़	और देख	लोगों के लिए	एक निशानी	और हम तुझे बनाएंगे	अपना गधा	तरफ़
كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ							
वाज़ेह हो गया	फिर जब	गोश्त	हम उसे पहनाते हैं	फिर	हम उन्हें जोड़ते हैं	किस तरह	
لَهُ ۚ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٥٩﴾							
259	कुदरत वाला	हर चीज़	पर	अल्लाह	कि	मैं जान गया	उस ने कहा उस पर

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ ارْنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَىٰ قَالَ أُولَٰئِكَ									
क्या नहीं	उस ने कहा	मुर्दा	तू ज़िन्दा करता है	क्योंकर	मुझे दिखा	मेरे रब	इब्राहीम	कहा	और जब
تُؤْمِنُ ۖ قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِنْ لَّيَظْمِنَنَّ قَلْبِي ۖ قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً									
चार	पस पकड़ ले	उस ने कहा	मेरा दिल	ताकि इत्मिनान हो जाए	बल्कि	क्यों नहीं	उस ने कहा	यकीन किया	
مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ									
उन से (उन के)	पहाड़	हर	पर	रख दे	फिर	अपने साथ	फिर उन को हिला	परिन्दे	से
جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ۚ وَاعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ									
गालिव	अल्लाह	कि	और जान ले	दौड़ते हुए	वह तेरे पास आएंगे	उन्हें बुला	फिर	टुकड़े	
حَكِيمٌ ﴿٢٦٠﴾ مَّثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ									
अल्लाह का रास्ता	में	अपने माल	खर्च करते हैं	जो लोग	मिसाल	260	हिक्मत वाला		
كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِي كُلِّ سُنبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ۚ									
दाने	सौ	हर बाल	में	बालें	सात	उगें	एक दाना	मानिंद	
وَاللَّهُ يُضْعِفُ لِمَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦١﴾ الَّذِينَ									
जो लोग	261	जानने वाला	बुस्अत वाला	और अल्लाह	चाहता है	जिस के लिए	बढ़ाता है	और अल्लाह	
يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُونَ مَا أَنْفَقُوا									
जो उन्होंने ने खर्च किया	बाद में नहीं रखते	फिर	अल्लाह का रास्ता	में	अपने माल	खर्च करते हैं			
مِّنَّا وَلَا آذَىٰ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ									
उन पर	कोई खौफ	और न	उन का रब	पास	उन का अजर	उन के लिए	कोई तकलीफ	और न	कोई एहसान
وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ ﴿٢٦٢﴾ قَوْلٌ مَّعْرُوفٌ وَمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ									
खैरात	से	बेहतर	और दरगुजर	अच्छी	वात	262	गुमगीन होंगे	वह	और न
يَتَّبِعُهَا آذَىٰ ۚ وَاللَّهُ غَنِيٌّ حَلِيمٌ ﴿٢٦٣﴾ يَأْتِيهَا الَّذِينَ آمَنُوا									
ईमान वालो	ऐ	263	बुर्दवार	बेनियाज़	और अल्लाह	ईज़ा देना (सताना)	उस के बाद हो		
لَا تُبْطِلُوا صَدَقَتَكُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَذَىٰ ۚ كَالَّذِي يُنْفِقُ مَالَهُ									
अपना माल	खर्च करता	उस शख्स की तरह जो	और सताना	एहसान जतला कर	अपने खैरात	न ज़ाया करो			
رِئَاءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ ۖ فَمَثَلُهُ كَمَثَلِ									
जैसी मिसाल	पस उस की मिसाल	और आखिरत का दिन	अल्लाह पर	और ईमान नहीं रखता	लोग	दिखलावा			
صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهُ وَابِلٌ فَتَرَكَهُ صَلْدًا ۚ لَا يَقْدِرُونَ									
वह कुदरत नहीं रखते	साफ़	तो उसे छोड़ दे	तेज़ बारिश	फिर उस पर बरसे	मिटटी	उस पर	चिकना पत्थर		
عَلَىٰ شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوا ۚ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ ﴿٢٦٤﴾									
264	काफ़िरों की कौम	राह नहीं दिखाता	और अल्लाह	उन्होंने ने कमाया	उस से जो	कोई चीज़	पर		

और जब इब्राहीम (अ) ने कहा मेरे रब! मुझे दिखा दे तू क्योंकर मुर्दा को ज़िन्दा करता है, अल्लाह ने कहा

क्या तू ने यकीन नहीं किया? उस ने कहा क्यों नहीं? बल्कि (चाहता हूँ) ताकि मेरे दिल को इत्मिनान हो जाए, उस ने कहा पस तू चार परिन्दे पकड़ ले, फिर उन को अपने साथ हिला ले, फिर रख दे हर पहाड़ पर उन के टुकड़े, फिर उन्हें बुला वह तेरे पास दौड़ते हुए आएं, और जान ले कि अल्लाह गालिव हिक्मत वाला है। (260)

उन लोगों की मिसाल जो खर्च करते हैं अपने माल अल्लाह के रास्ते में, एक दाने के मानिंद है जिस से सात बालें उगें, हर बाल में सौ दाने हों, और अल्लाह जिस के लिए चाहता है बढ़ाता है, और अल्लाह बुस्अत वाला जानने वाला है। (261)

जो लोग अपने माल अल्लाह के रास्ते में खर्च करते हैं, फिर नहीं रखते खर्च करने के बाद कोई एहसान, न कोई तकलीफ़ (पहुँचाते हैं) उन के लिए उन के रब के पास अजर है, न कोई खौफ़ उन पर, और न वह गुमगीन होंगे। (262)

अच्छी बात करना और दरगुजर करना बेहतर है उस खैरात से जिस के बाद ईज़ा देना हो, और अल्लाह बेनियाज़ बुर्दवार है। (263)

ऐ ईमान वालो! अपने खैरात एहसान जतला कर और सता कर ज़ाया न करो, उस शख्स की तरह जो अपना माल लोगों के दिखलावे को खर्च करता है, और अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान नहीं रखता, पस उस की मिसाल उस साफ़ पत्थर जैसी है जिस पर मिट्टी हो, फिर उस पर तेज़ बारिश बरसे तो उसे छोड़ दे बिलकुल साफ़, वह उस पर कुछ कुदरत नहीं रखते जो उन्होंने ने कमाया, और अल्लाह राह नहीं दिखाता काफ़िरों को। (264)

और (उन की) मिसाल जो अपने माल खर्च करते हैं खुशनूदी हासिल करने अल्लाह की, और अपने दिलों के पूरे सवात ओ करार के साथ, (ऐसी है) जैसे बुलन्दी पर एक बाग़ है, उस पर तेज़ बारिश पड़ी तो उस ने दुगना फल दिया, फिर अगर तेज़ बारिश न पड़ी तो फूवार (ही काफी है), और अल्लाह जो तुम करते हो देखने वाला है। (265)

क्या तुम में से कोई पसन्द करता है? कि उस का एक बाग़ हो खजूर और अंगूरों का, उस के नीचे नहरें बहती हों, उस के लिए उस में हर किस्म के फल हों, और उस पर बुढ़ापा आ गया हो, और उस के बच्चे बहुत कमज़ोर हों, तब उस पर एक बगोला आ पड़ा, उस में आग थी तो वह (बाग़) जल गया, इसी तरह अल्लाह तुम्हारे लिए निशानियां बाज़ेह करता है ताकि तुम ग़ौर ओ फ़िक्र करो। (266)

ऐ ईमान वालो! खर्च करो! उस में से पाकीज़ा चीज़ें जो तुम कमाओ, और उस में से जो हम ने निकाला तुम्हारे लिए ज़मीन से, और उस में से गन्दी चीज़ खर्च करने का इरादा न करो, जबकि तुम खुद उस को लेने वाले नहीं, मगर यह कि तुम चशम पोशी कर जाओ, और जान लो कि अल्लाह बेनियाज़, खूबियों वाला है। (267)

शैतान तुम को तंगदस्ती से डराता है, और तुम्हें बेहयाई का हुक्म देता है, और अल्लाह तुम से अपनी बख़्शिश और फज़ल का वादा करता है, और अल्लाह वुस्अत वाला जानने वाला है। (268)

वह जिसे चाहता है हिक्मत (दानाई) अता करता है, और जिसे हिक्मत दी गई तहकीक़ उसे दी गई बहुत भलाई, और अक़ल वालों के सिवा कोई नसीहत कुबूल नहीं करता। (269)

وَمَثَلُ الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ						
और मिसाल	जो लोग	खर्च करते हैं	अपने माल	हासिल करना	खुशनूदी	अल्लाह
وَتَثْبِيئًا مِّنْ أَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍ بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌ						
और सवात ओ यक़ीन	से	अपने दिल (जमा)	जैसे	एक बाग़	बुलन्दी पर	उस पर पड़ी
فَآتَتْ أُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ فَإِن لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ وَاللَّهُ						
तो उस ने दिया	फल	दुगना	फिर अगर	न पड़ी	तेज़ बारिश	तो फूवार
जो	तुम करते हो	देखने वाला	265	क्या पसन्द करता है	तुम में से कोई	कि
से	एक बाग़	उस का	हो	तुम में से	कोई	का)
تَخِيلُ وَأَعْنَابٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لَهُ فِيهَا مِنْ						
खजूर	और अंगूर	बहती हो	से	उस के नीचे	उस के लिए	उस में
كُلِّ الثَّمَرَاتِ وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَاءٌ فَأَصَابَهَا						
हर किस्म के फल	और उस पर आ गया	बुढ़ापा	और उस के	बच्चे	बहुत कमज़ोर	तब उस पर पड़ा
إِعْصَارٌ فِيهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمْ الْآيَاتِ						
एक बगोला	उस में	आग	तो वह जल गया	इसी तरह	बाज़ेह करता है	तुम्हारे लिए
لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢٦٦﴾ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا أَنْفِقُوا مِنْ						
ताकि तुम	ग़ौर ओ फ़िक्र करो	266	ऐ	जो ईमान लाए (ईमान वालो)	तुम खर्च करो	से
طَيِّبَتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّا أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِنَ الْأَرْضِ						
पाकीज़ा	जो	तुम कमाओ	और से-जो	हम ने निकाला	तुम्हारे लिए	से
وَلَا تَيْمَمُوا الْحَبِثَ مِنْهُ تُنْفِقُونَ وَلَسْتُمْ بِأَخْذِيهِ						
और न	इरादा करो	गन्दी चीज़	से-जो	तुम खर्च करते हो	जबकि तुम नहीं हो	उस को लेने वाले
إِلَّا أَنْ تُغْمِضُوا فِيهِ ۚ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَمِيدٌ ﴿٢٦٧﴾						
मगर	यह कि	चशम पोशी करो	उस में	और तुम जान लो	कि	अल्लाह
الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاءِ ۚ وَاللَّهُ						
शैतान	तुम को डराता है	तंगदस्ती	और तुम्हें हुक्म देता है	बेहयाई का	और अल्लाह	
يَعِدُكُم مَّغْفِرَةً مِنْهُ وَفَضْلًا ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٢٦٨﴾						
तुम से वादा करता है	बख़्शिश	उस से (अपनी)	और फज़ल	और अल्लाह	वुस्अत वाला	जानने वाला
يُؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَنْ يُؤْتَ الْحِكْمَةَ						
वह अता करता है	हिक्मत, दानाई	जिसे	वह चाहता है	और जिसे	दी गई	हिक्मत
فَقَدْ أُوتِيَ خَيْرًا كَثِيرًا ۚ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُوا الْأَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾						
तहकीक़ दी गई	भलाई	बहुत	और नहीं	नसीहत कुबूल करता	सिवाए	अक़ल वाले

وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ نَفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ مِنْ نَذْرٍ						
और जो	तुम खर्च करोगे	से	कोई ख़ैरात	या	तुम नज़र मानो	कोई नज़र
فَإِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُهُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ (٢٧٠)						
तो बेशक	अल्लाह	उसे जानता है	और नहीं	ज़ालिमों के लिए	कोई मददगार	270
إِنْ تُبْذُوا الصَّدَقَاتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَإِنْ تُخْفَوْهَا						
अगर	ज़ाहिर (अलानिया) दो	ख़ैरात	तो अच्छी बात	यह	और अगर	उस को छुपाओ तुम
وَتُؤْتُوهَا الْفُقَرَاءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكُمْ ۖ وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ						
और वह पहुँचाओ	तंगदस्त (जमा)	तो वह	बेहतर	तुम्हारे लिए	और दूर कर देगा	तुम से
مِنْ سَيِّئَاتِكُمْ ۗ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ خَبِيرٌ (٢٧١) لَيْسَ						
से, कुछ	तुम्हारी बुराइयाँ	और अल्लाह	जो कुछ तुम करते हो	वाख़बर	271	नहीं
عَلَيْكَ هُدَاهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ يَهْدِي مَنْ يَشَاءُ ۚ وَمَا						
आप पर (आप का ज़िम्मा)	उन की हिदायत	और लेकिन	अल्लाह	हिदायत देता है	जिसे	वह चाहता है और जो
تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ فَلِأَنْفُسِكُمْ ۚ وَمَا تُنْفِقُونَ إِلَّا ابْتِغَاءَ						
तुम खर्च करोगे	माल से	तो अपने वासते	और न	खर्च करो	मगर	हासिल करना
وَجْهِ اللَّهِ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ يُؤَفَّ إِلَيْكُمْ						
अल्लाह की रज़ा	और जो	तुम खर्च करोगे	माल से	पूरा मिलेगा	तुम्हें	
وَأَنْتُمْ لَا تَظْلَمُونَ (٢٧٢) لِلْفُقَرَاءِ الَّذِينَ أَحْصَرُوا						
और तुम	न ज़ियादती की जाएगी तुम पर	272	तंगदस्तों के लिए	जो	रुके हुए	
فِي سَبِيلِ اللَّهِ لَا يَسْتَطِيعُونَ ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ						
में	अल्लाह का रास्ता	नहीं ताक़त रखते	चलना फिरना	ज़मीन (मुल्क) में		
يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَاءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۖ تَعْرِفُهُمْ بِسِيمِهِمْ ۚ						
उन्हें समझे	नावाक़िफ़	मालदार	सवाल से बचने से	तू पहचानता है उन्हें	उन के चहरे से	
لَا يَسْأَلُونَ النَّاسَ إِلْحَافًا ۚ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ خَيْرٍ						
वह सवाल नहीं करते	लोग	लिपट कर	और जो	तुम खर्च करोगे	माल से	
فَإِنَّ اللَّهَ بِهِ عَلِيمٌ (٢٧٣) الَّذِينَ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ						
तो बेशक	अल्लाह	उस को	जानने वाला	273	जो लोग	खर्च करते हैं अपने माल
بِالْأَيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ						
रात में	और दिन	पोशीदा	और ज़ाहिर	पस उन के लिए है	उन का अज़र	
عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (٢٧٤)						
पास	उन का रब	और न	कोई ख़ौफ़	उन पर	और न	वह ग़मगीन होंगे 274

और जो तुम खर्च करोगे कोई ख़ैरात या तुम कोई नज़र मानोगे, तो बेशक अल्लाह उसे जानता है और ज़ालिमों के लिए कोई मददगार नहीं। (270)

अगर तुम ख़ैरात ज़ाहिर (अलानिया) दो तो यह अच्छी बात है, और अगर तुम उस को छुपाओ, और तंगदस्तों को पहुँचाओ तो वह तुम्हारे लिए (ज़ियादा) बेहतर है, और वह दूर करेगा तुम्हारी कुछ बुराइयाँ, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उस से वाख़बर है। (271)

उन की हिदायत आप का ज़िम्मा नहीं, लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है, और तुम जो माल खर्च करोगे तो अपने (ही) वासते, और खर्च न करो मगर अल्लाह की रज़ा हासिल करने के लिए, और तुम जो माल खर्च करोगे तुम्हें पूरा पूरा मिलेगा, और तुम पर ज़ियादती न की जाएगी। (272)

तंगदस्तों के लिए जो रुके हुए हैं अल्लाह की राह में, वह मुल्क में चलने फिरने की ताक़त नहीं रखते, उन्हें समझे नावाक़िफ़ उन के सवाल न करने की वजह से मालदार, तूम उन्हें उन के चहरे से पहचान सकते हो, वह सवाल नहीं करते लोगों से लिपट लिपट कर, और तुम जो माल खर्च करोगे तो बेशक अल्लाह उस को जानने वाला है। (273)

जो लोग अपने माल खर्च करते हैं रात में और दिन को, पोशीदा और ज़ाहिर, पस उन के लिए है उन का अज़र, उन के रब के पास, न उन पर कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (274)

जो लोग सूद खाते हैं वह न खड़े होंगे मगर जैसे वह शख्स खड़ा होता है जिस को पागल बना दिया हो शैतान ने छू कर, यह इस लिए कि उन्होंने ने कहा तिजारत दर हकीकत सूद के मानिंद है। हालांकि अल्लाह ने तिजारत को हलाल किया, और सूद को हाराम किया, पस जिस को नसीहत पहुँची उस के रब की तरफ से फिर वह बाज़ आ गया तो उस के लिए है जो हो चुका, और उस का मुआमला अल्लाह के सुपुर्द है और जो फिर (सूद की तरफ) लौटे तो वही दोज़ख वाले हैं, वह उस में हमेशा रहेंगे। (275)

अल्लाह सूद को मिटाता है और ख़ैरात को बढ़ाता है, और अल्लाह हर एक (किसी) नाशुके गुनाहगार को पसन्द नहीं करता। (276)

वेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ने नेक अमल किए, और नमाज़ काइम की और ज़कात अदा की, उन के लिए उन का अजर है उन के रब के पास, और न उन पर कोई ख़ौफ़ होगा और न वह ग़मगीन होंगे। (277)

ऐ ईमान वाले! तुम अल्लाह से डरो, और जो सूद बाकी रह गया वह छोड़ दो। अगर तुम ईमान वाले हो। (278)

फिर अगर तुम न छोड़ोगे तो अल्लाह और उस के रसूल से जंग के लिए खबरदार हो जाओ, और अगर तुम ने तौबा कर ली तो तुम्हारा असल ज़र तुम्हारे लिए है, न तुम जुल्म करो न तुम पर जुल्म किया जाएगा। (279)

और अगर वह तंगदस्त हो तो कुशादगी होने तक मोहलत दे दो, और अगर (क़र्ज़) बख़्श दो तो तुम्हारे लिए ज़ियादा बेहतर है अगर तुम जानते हो। (280)

और उस दिन से डरो (जस दिन) तुम अल्लाह की तरफ लौटाए जाओगे, फिर हर शख्स को पूरा पूरा दिया जाएगा जो उस ने कमाया और उन पर जुल्म न होगा। (281)

الَّذِينَ يَأْكُلُونَ الرِّبَا لَا يَقُومُونَ إِلَّا كَمَا يَقُومُ الَّذِي							
जो लोग	खाते हैं	सूद	न खड़े होंगे	मगर	जैसे	खड़ा होता है	वह शख्स जो
يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطَانُ مِنَ الْمَسِّ ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا إِنَّمَا الْبَيْعُ							
उस को पागल बना दिया	शैतान	छूने से	यह	इस लिए कि वह	उन्होंने ने कहा	दर हकीकत	तिजारत
مِثْلُ الرِّبَا وَأَحَلَّ اللَّهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبَا فَمَنْ جَاءَهُ							
मानिंद	सूद	हालांकि हलाल किया	अल्लाह	तिजारत	और हाराम किया	सूद	पस जिस
مَوْعِظَةً مِّن رَّبِّهِ فَانْتَهَى فَلَهُ مَا سَلَفَ وَأَمْرُهُ إِلَى اللَّهِ							
नसीहत	से	उस का रब	फिर वह बाज़ आ गया	तो उस के लिए	जो हो चुका	और उस का मुआमला	तरफ
وَمَنْ عَادَ فَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (275)							
और जो	फिर करे	तो वही	दोज़ख वाले	वह	उस में	हमेशा रहेंगे	275
يَمَحَقُ اللَّهُ الرِّبَا وَيُزْبِي الصَّدَقَتِ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ							
मिटता है	अल्लाह	सूद	और बढ़ाता है	ख़ैरात	और	अल्लाह	पसन्द नहीं करता
كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ (276) إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ							
हर एक नाशुका	गुनाहगार	276	वेशक	जो लोग ईमान लाए	और उन्होंने ने अमल किए	नेक	
وَأَقَامُوا الصَّلَاةَ وَآتُوا الزَّكَاةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ							
और उन्होंने ने काइम की	नमाज़	और अदा की	ज़कात	उन के लिए	उन का अजर	पास	उन का रब
وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (277) يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا							
और न	कोई ख़ौफ़	उन पर	और न वह	ग़मगीन होंगे	ऐ	जो ईमान लाए (ईमान वाले)	तुम डरो
اللَّهُ وَذَرُوا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِن كُنْتُمْ مُّؤْمِنِينَ (278)							
अल्लाह	और छोड़ दो	जो बाकी रह गया	से	सूद	अगर	तुम हो	ईमान वाले
فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوا فَأْذَنُوا بِحَرْبٍ مِّنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَإِنْ تُبْتُمْ							
फिर अगर	तुम न छोड़ोगे	तो खबरदार हो जाओ	जंग के लिए	से	अल्लाह	और उस का रसूल	और अगर
فَلََكُمْ رُعُوسٌ أَمْوَالِكُمْ لَا تَظْلِمُونَ وَلَا تُظْلَمُونَ (279)							
तो तुम्हारे लिए	तुम्हारे असल ज़र	न तुम जुल्म करो	और न तुम पर जुल्म किया जाएगा	279			
وَإِنْ كَانَ ذُو عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ وَأَنْ تَصَدَّقُوا							
और अगर	हो	तंगदस्त	मुहलत	तक	कुशादगी	और अगर	तुम बख़्शदो
خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ (280) وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ							
बेहतर	तुम्हारे लिए	अगर	तुम हो	जानते	280	और तुम डरो	वह दिन
إِلَى اللَّهِ ثُمَّ تُوَفَّى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ (281)							
अल्लाह की तरफ	फिर	पूरा दिया जाएगा	हर शख्स	जो	उस ने कमाया	और वह	जुल्म न किये जाएंगे
281							

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ إِلَى أَجَلٍ مُّسَمًّى							
मुकर्ररा	एक मुददत	तक	उधार का	तुम मुआमला करो	जब	ईमान लाए	वह जो कि
فَاكْتُبُوهُ ۖ وَلْيَكْتُب بَيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ ۚ وَلَا يَأْب كَاتِبٌ							
कातिब	और न इन्कार करे	इन्साफ़ से	कातिब	तुम्हारे दरमियान	और चाहिए कि लिख दे	तो उसे लिख लिया करो	
أَنْ يَكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللَّهُ ۚ فَلْيَكْتُب ۚ وَلْيُمْلِلِ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ							
उस पर हक़	वह जो	और लिखाता जाए	चाहिए कि लिख दे	अल्लाह	उस को सिखाया	जैसे	कि वह लिखे
وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْئًا ۚ فَإِنْ كَانَ الَّذِي							
वह जो	है	फिर अगर	कुछ	उस से	कम करे	और न	अपना रख
عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيهَا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْتَطِيعُ أَنْ يُمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ							
तो चाहिए कि लिखाए	लिखाए वह	कि	न कर सकता हो	या	कमज़ोर	या	बेअक्ल
وَلِيُّهُ بِالْعَدْلِ ۚ وَاسْتَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ مِنْ رِجَالِكُمْ ۚ							
अपने मर्द	से	दो गवाह	और गवाह कर लो	इन्साफ़ से	उस का सरपरस्त		
فَإِنْ لَّمْ يَكُونَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتَانِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ							
तुम पसन्द करो	से - जो	और दो औरतें	तो एक मर्द	दो मर्द	न हों	फिर अगर	
مِنَ الشَّهَدَاءِ أَنْ تَضِلَّ إِحْدَاهُمَا فَتُذَكِّرَ إِحْدَاهُمَا الْأُخْرَى ۚ							
दूसरी	उन में से एक	तो याद दिला दे	उन में से एक	भूल जाए	अगर	गवाह (जमा)	से
وَلَا يَأْب الشَّهَدَاءُ إِذَا مَا دُعُوا ۚ وَلَا تَسْمُوا أَنْ تَكْتُبُوهُ							
तुम लिखो	की	सुस्ती करो	और न	वह बुलाए जाएं	जब	गवाह	और न इन्कार करें
صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَىٰ أَجَلِهِ ۚ ذَلِكُمْ أَفْسَطُ عِنْدَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ							
और ज़ियादा मज़बूत	अल्लाह के नज़दीक	ज़ियादा इन्साफ़	यह	एक मीआद	तक	बड़ा	या छोटा
لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنَىٰ إِلَّا تَرْتَابُوا إِلَّا أَنْ تَكُونَ تِجَارَةً حَاضِرَةً							
हाज़िर (हाथों हाथ)	सौदा	हो	सिवाए कि	शुबा में पड़ो	कि न	और ज़ियादा करीब	गवाही के लिए
تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوهَا ۚ							
कि तुम वह न लिखो	तुम पर कोई गुनाह	तो नहीं	आपस में	जिसे तुम लेते रहते हो			
وَأَشْهِدُوا إِذَا تَبَايَعْتُمْ ۚ وَلَا يُضَارَّ كَاتِبٌ وَلَا شَهِيدٌ							
गवाह	और न	लिखने वाला	और न नुक़सान पहुँचाया जाये	जब तुम सौदा करो	और तुम गवाह कर लो		
وَأَنْ تَفْعَلُوا فَإِنَّهُ فُسُوقٌ بِكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ							
अल्लाह	और तुम डरो	तुम पर	गुनाह	तो वेशक यह	तुम करोगे	और अगर	
وَيُعَلِّمُكُمُ اللَّهُ ۚ وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿٢٨٢﴾							
282	जानने वाला	हर चीज़	और अल्लाह	अल्लाह	और सिखाता है तुम्हें		

ऐ वह लोगो जो ईमान लाए हो (मोमिनो!) जब तुम एक मुकर्ररा मुददत तक (के लिए) उधार का मुआमला करो तो उसे लिख लिया करो और चाहिए कि लिख दे लिखने वाला तुम्हारे दरमियान इन्साफ़ से, और कातिब लिखने से इन्कार न करे, जैसे उस को सिखाया है अल्लाह ने, उसे चाहिए कि लिख दे, और जिस पर हक़ (कर्ज़) है वह लिखाता जाए, और अपने रख अल्लाह से डरे, और न उस से कुछ कम करे, फिर अगर वह जिस पर हक़ (कर्ज़) है वह बेअक्ल या कमज़ोर है या न लिखा सकता हो बोल कर, तो चाहिए कि उस का सरपरस्त इन्साफ़ से लिखा दे और अपने मर्दों में से दो गवाह कर लो, फिर अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें जिन को तुम गवाह पसन्द करो (ताकि) अगर उन में से एक भूल जाए तो उन में से एक (दूसरी) याद दिला दे, और गवाह इन्कार न करें जब बुलाए जाएं और तुम लिखने में सुस्ती न करो (ख्वाह मुआमला) छोटा हो या बड़ा, एक मीआद तक, यह ज़ियादा इन्साफ़ है और गवाही के लिए ज़ियादा मज़बूत है अल्लाह के नज़दीक, और ज़ियादा करीब है कि तुम शुबा में न पड़ो, उस के सिवाए कि सौदा हाथों हाथ का हो जिसे तुम आपस में लेते रहते हो, तो कोई गुनाह नहीं कि तुम वह न लिखो और जब तुम सौदा करो तो गवाह कर लिया करो, और न नुक़सान पहुँचाया जाये कातिब को और न गवाह को, और अगर तुम ऐसा करोगे तो यह वेशक तुम पर गुनाह है, और तुम अल्लाह से डरो, और अल्लाह तुम्हें सिखाता है, और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (282)

और अगर तुम सफ़र पर हो और कोई लिखने वाला न पाओ तो गिरवी रखना चाहिए कब्जे में, फिर अगर तुम में कोई किसी का एतिबार करे तो जिस शख्स को अमीन बनाया गया है उसे चाहिए कि लौटा दे उस की अमानत, और अपने रब अल्लाह से डरे, और तुम गवाही न छुपाओ, और जो शख्स उसे छुपाएगा तो बेशक उस का दिल गुनहगार है, और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे जानने वाला है। (283)

अल्लाह के लिए है जो आस्मानों और ज़मीन में है, और अगर तुम ज़ाहिर करो जो तुम्हारे दिलों में है या तुम उसे छुपाओ, अल्लाह तुम से उस का हिसाब लेगा, फिर जिस को वह चाहे बख़्श दे और जिसको वह चाहे अज़ाब दे, और अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखने वाला है। (284)

रसूल ने मान लिया जो कुछ उस की तरफ़ उतरा उस के रब की तरफ़ से और मोमिनो ने (भी), सब ईमान लाए अल्लाह पर, और उस के फरिश्तों पर, और उस की किताबों पर, और उस के रसूलों पर, हम उस के रसूलों में से किसी एक के दरमियान फ़र्क नहीं करते, और उन्होंने ने कहा हम ने सुना और हम ने इताअत की, तेरी बख़्शिश चाहिए ऐ हमारे रब! और तेरी तरफ़ लौट कर जाना है। (285)

अल्लाह किसी को तक्लीफ़ नहीं देता मगर उस की गुनजाइश (के मुताबिक़) उस के लिए (अजर) है जो उस ने कमाया, और उस पर (अज़ाब) है जो उस ने कमाया, ऐ हमारे रब! हमें न पकड़ अगर हम भूल जाएं या हम चूकें, ऐ हमारे रब! हम पर बोझ न डाल जैसे तू ने डाला हम से पहले लोगों पर, ऐ हमारे रब! हम से न उठवा जिस की हम को ताक़त नहीं, और दरगुज़र फ़रमा हम से, और हमें बख़्श दे, और हम पर रहम कर, तू हमारा आका है, पस हमारी मदद कर काफ़िरो की कौम पर। (286)

وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَى سَفَرٍ وَلَمْ تَجِدُوا كَاتِبًا فَرِهْنِ مَقْبُوضَةً ۖ								
और अगर	तुम हो	पर	सफ़र	और न	तुम पाओ	कोई लिखने वाला	तो गिरवी रखना	कब्जे में
فَإِنْ أَمِنَ بَعْضُكُم بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي أُوتِيَ أَمَانَتَهُ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ رَبَّهُ ۖ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ۚ وَمَنْ يَكْتُمْهَا فَإِنَّهُ إِثْمٌ قَلْبُهُ ۚ								
फिर अगर	एतिबार करे	तुम्हारा कोई	किसी का	तो चाहिए कि लौटा दे	जो शख्स	अमीन बनाया गया	उस की अमानत	और डरे
अल्लाह	अल्लाह	अल्लाह	अल्लाह	अल्लाह	अल्लाह	अल्लाह	अल्लाह	अल्लाह
अपना रब	और तुम न छुपाओ	गवाही	और जो	उसे छुपाएगा	तो बेशक	गुनहगार	उस का दिल	उस का दिल
وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨٣﴾ اللَّهُ مَا فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ								
और अल्लाह	उसे जो	तुम करते हो	जानने वाला	283	अल्लाह के लिए	जो	में	आस्मानों और ज़मीन में
وَإِنْ تُبَدُّوا مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللَّهُ ۚ								
और अगर	तुम ज़ाहिर करो	जो	में	तुम्हारे दिल	या	तुम उसे छुपाओ	तुम्हारे हिसाब लेगा	उस का
अल्लाह	अल्लाह	अल्लाह	अल्लाह	अल्लाह	अल्लाह	अल्लाह	अल्लाह	अल्लाह
فَيَغْفِرَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ								
फिर बख़्श देगा	जिस को	वह चाहे	वह अज़ाब देगा	जिस को	वह चाहे	और अल्लाह	पर	पर
كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٨٤﴾ أَمِنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ								
हर चीज़	कुदरत रखने वाला	284	मान लिया	रसूल	जो कुछ	उस की तरफ़	से	उस का रब
وَالْمُؤْمِنُونَ ۚ كُلٌّ أَمِنَ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ ۚ								
और मोमिन (जमा)	सब	ईमान लाए	अल्लाह पर	और उस के फरिश्ते	और उस की किताबें	और उस के रसूल	और उस के	और उस के
لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهِ ۚ وَقَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا								
नहीं हम फ़र्क करते	दरमियान	किसी एक	उस के रसूल के	और उन्होंने ने कहा	हम ने सुना	और हम ने इताअत की	और हम ने	और हम ने
غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ ﴿٢٨٥﴾ لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا								
तेरी बख़्शिश	हमारे रब	और तेरी तरफ़	लौट कर जाना	285	नहीं तक्लीफ़ देता	अल्लाह	किसी को	मगर
وُسْعَهَا ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۚ رَبَّنَا								
उस की गुनजाइश	उस के लिए	जो	उस ने कमाया	और उस पर	जो उस ने कमाया	हमारे रब	ऐ हमारे रब	ऐ हमारे रब
لَا تُؤَاخِذْنَا إِنْ نَسِينَا أَوْ أَخْطَأْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا								
तो न पकड़ हमें	अगर	हम भूल जाएं	या	हम चूकें	ऐ हमारे रब	और न	डाल	हम पर
إِصْرًا ۚ كَمَا حَمَلْتَهُ عَلَى الَّذِينَ مِن قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا								
बोझ	जैसे	तू ने डाला	पर	जो लोग	हम से पहले	ऐ हमारे रब	और न	हम से उठवा
مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهِ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۖ وَاعْفِرْ لَنَا ۚ								
जो	न ताक़त	हम को	उस की	और दरगुज़र कर तू हम से	और बख़्श दे हमें	और बख़्श दे हमें	और बख़्श दे हमें	और बख़्श दे हमें
وَارْحَمْنَا ۚ أَنْتَ مَوْلَانَا فَانصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ ﴿٢٨٦﴾								
और हम पर रहम कर	तू	हमारा आका	पस मदद कर हमारी	पर	कौम	काफ़िर (जमा)	286	286

۲۰ رُكُوعَاتُهَا (۳) سُورَةُ آلِ عِمْرَانَ ۲۰۰ آیَاتُهَا 20 रुकुआत (3) सूरह आले इमरान 200 आयत									
بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ○									
		रहम करने वाला		बहुत मेहरबान		अल्लाह		नाम से	
۱ اللَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ ۲ نَزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابُ									
किताब	आप पर	उस ने उतारी	2	संभालने वाला	हमेशा ज़िन्दा	उस के सिवा	माबूद नहीं	अल्लाह	1 अलिफ-लाम-मीम
۳ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنزَلَ التَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ									
3	और इन्जील	तौरत		और उस ने उतारी	उस से पहली	उस के लिए जो	तसदीक करती	हक के साथ	
۴ مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَأَنزَلَ الْفُرْقَانَ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا									
इन्कार किया	जिन्होंने ने	वेशक		फूरकान	और उतारा	लोगों के लिए	हिदायत	उस से पहले	
۵ بَايَتِ اللَّهُ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ وَاللَّهُ عَزِيزٌ ذُو انتِقَامٍ									
4	लेने वाला	बदला	ज़बरदस्त	और अल्लाह	सख्त	अज़ाब	उन के लिए	अल्लाह	आयतों से
۶ إِنَّ اللَّهَ لَا يَخْفَىٰ عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَاءِ									
5	आस्मान में	और न		ज़मीन में	कोई चीज़	उस पर	नहीं छुपी हुई	अल्लाह	वेशक
هُوَ الَّذِي يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَاءُ لَا إِلَهَ									
नहीं माबूद	वह चाहे	जैसे		रहम (जमा)	में	सूरत बनाता है तुम्हारी	जो कि	वही है	
۷ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۸ هُوَ الَّذِي أَنزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ مِنْهُ									
उस से (में)	किताब	आप पर	नाज़िल की	जिस	वही	6	हिक्मत वाला	ज़बरदस्त	उस के सिवा
۹ آيَاتٍ مُّحْكَمَاتٍ هُنَّ أُمُّ الْكِتَابِ وَأُخَرُ مُتَشَبِهَاتٌ فَأَمَّا الَّذِينَ									
जो लोग	पस जो	मुताशाबेह	और दूसरी	किताब की असल	वह		मुहक्कम (पुख्ता)	आयतें	
فِي قُلُوبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُونَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَاءَ									
चाहना (गर्ज)	उस से	मुताशाबेहात		सो वह पैरवी करते हैं	कजी		उन के दिल	में	
۱۰ الْفِتْنَةَ وَابْتِغَاءَ تَأْوِيلِهِ ۱۱ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيلَهُ إِلَّا اللَّهُ									
अल्लाह	सिवाए	उस का मतलब	जानता है	और नहीं	उस का मतलब		ढूँडना	फसाद - गुमराही	
۱۲ وَالرُّسُخُونَ فِي الْعِلْمِ يَقُولُونَ آمَنَّا بِهِ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا									
हमारा रब	से - पास (तरफ़)	सब	उस पर	हम ईमान लाए	कहते हैं	इल्म में	और मज़बूत		
۱۳ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّا أُولُو الْأَلْبَابِ ۱۴ رَبَّنَا لَا تَزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ									
बाद	हमारे दिल	फेर	न	ऐ हमारे रब	7	अक़ल वाले	मगर	समझते	और नहीं
۱۵ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ									
8	सब से बड़ा देने वाला	तू	वेशक तू	रहमत	अपने पास	से	हमें	और इनायत फर्मा	तू ने हमें हिदायत दी
9									

अल्लाह के नाम से जो बहुत मेहरबान, रहम करने वाला है

(1) अलिफ-लाम-मीम

अल्लाह, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, हमेशा ज़िन्दा, (सब का) संभालने वाला। (2)

उस ने आप (स) पर किताब उतारी हक के साथ जो उस से पहली (किताबों की) तसदीक करती है, और उस ने तौरत और इन्जील उतारी, (3)

उस से पहले लोगों की हिदायत के लिए, और उस ने फुरकान (हक को बातिल से जुदा करने वाला) उतारा, वेशक जिन्होंने ने अल्लाह की आयतों से इन्कार किया, उन के लिए सख्त अज़ाब है, और अल्लाह ज़बरदस्त है, बदला लेने वाला। (4)

वेशक अल्लाह पर छुपी हुई नहीं कोई चीज़, ज़मीन में और न आस्मान में, (5)

वही तो है जो तुम्हारी सूरत बनाता है (माँ के) रहम में जैसे वह चाहे, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, ज़बरदस्त हिक्मत वाला। (6)

वही तो है जिस ने आप (स) पर किताब नाज़िल की, उस में मुहक्कम (पुख्ता) आयतें हैं वह किताब की असल हैं, और दूसरी मुताशाबेह (कई मानी देने वाली), पस जिन लोगों के दिलों में कजी है सो वह उस से मुताशाबेहात की पैरवी करते हैं, फसाद (गुमराही) की गर्ज से और उस का (ग़लत) मतलब ढूँडने की गर्ज से, और उस का मतलब अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता, और मज़बूत (पुख्ता) इल्म वाले कहते हैं हम उस पर ईमान लाए सब हमारे रब की तरफ़ से है। और नहीं समझते मगर अक़ल वाले (सिर्फ़ अक़ल वाले समझते हैं) (7)

ऐ हमारे रब! हमारे दिल न फेर इस के बाद जब कि तू ने हमें हिदायत दी, और हमें इनायत फ़र्मा अपने पास से रहमत, वेशक तू सब से बड़ा देने वाला है। (8)

ऐ हमारे रब! वेशक तू लोगों को उस दिन जमा करने वाला है कोई शक नहीं उस में, वेशक अल्लाह वादे के खिलाफ नहीं करता। (9)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया, हरगिज़ न उन के माल उन के काम आएंगे, और न उन की औलाद, अल्लाह के सामने कुछ भी, और वही वह दोज़ख़ का इंधन है। (10)

जैसे फिरऔन वालों का मामला हुआ, और वह जो उन से पहले थे, उन्होंने ने हमारी आयतों को झुटलाया तो अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों पर पकड़ा, और अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है। (11)

जिन लोगों ने कुफ़ किया उन्हें कह दें तुम अनकरीब मग़लूब होगे और जहन्नम की तरफ़ हाँके जाओगे, और वह बुरा ठिकाना है। (12)

अलबत्ता तुम्हारे लिए उन दो गिरोहों में निशानी है जो वाहम मुकाबिल हुए, एक गिरोह लड़ता था अल्लाह की राह में, और दूसरा काफ़िर था, वह उन्हें खुली आँखों से अपने से दो चन्द दिखाई देते थे, और अल्लाह अपनी मदद से जिसे चाहता है ताईद करता है, वेशक उस में देखने वालों (अक्लमन्दों) के लिए एक इव्रत है। (13)

लोगों के लिए मरगूब चीज़ों की सुहव्वत खुशनुमा कर दी गई, मसलन औरतें और बेटे, और ढेर जमा किए हुए सोने और चाँदी के, और निशान ज़दा घोड़े, और मवेशी, और खेती, यह दुन्या की ज़िन्दगी का साज़ ओ सामान है, और अल्लाह के पास अच्छा ठिकाना है। (14)

कह दें, क्या मैं तुम्हें इस से बेहतर बताऊँ? उन लोगों के लिए जो परहेज़गार हैं, उन के रब के पास बागात हैं, जिन के नीचे नहरें जारी (रवाँ) हैं, वह उन में हमेशा रहेंगे, और पाक बीबियाँ और अल्लाह की खुशनुमी, और अल्लाह बन्दों को देखने वाला है। (15)

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَا رَيْبَ فِيهِ إِنَّ اللَّهَ لَا يُخْلِفُ

नहीं खिलाफ करता	अल्लाह	वेशक	उस में	नहीं शक	उस दिन	लोगों	जमा करने वाला	वेशक तू	ऐ हमारे रब
-----------------	--------	------	--------	---------	--------	-------	---------------	---------	------------

الْمِيعَادِ (٩) إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ

उन के माल	उन के	काम आएंगे	हरगिज़ न	उन्होंने ने कुफ़ किया	वह लोग जो	वेशक	9	वादा
-----------	-------	-----------	----------	-----------------------	-----------	------	---	------

وَلَا أَوْلَادُهُمْ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا وَأُولَئِكَ هُمْ وَقُودُ النَّارِ (١٠)

और न	उन की औलाद	से	अल्लाह	कुछ	और वही	वह	इंधन	आग (दोज़ख़)	10
------	------------	----	--------	-----	--------	----	------	-------------	----

كَذَّابٍ أَلٍ فِرْعَوْنَ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ كَذَّبُوا بِآيَاتِنَا فَآخَذَهُمْ

जैसे - मामला	फिरऔन वाले	और वह जो कि	से - उन से पहले	उन्होंने ने झुटलाया	हमारी आयतें	सो उन्हें पकड़ा
--------------	------------	-------------	-----------------	---------------------	-------------	-----------------

اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَاللَّهُ شَدِيدُ الْعِقَابِ (١١) قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا

अल्लाह	उन के गुनाहों पर	और अल्लाह	सख़्त	अज़ाब	11	कह दें	वह जो कि	उन्होंने ने कुफ़ किया
--------	------------------	-----------	-------	-------	----	--------	----------	-----------------------

سَعْلَبُونَ وَتُحْشَرُونَ إِلَىٰ جَهَنَّمَ وَبِئْسَ الْمِهَادُ (١٢) قَدْ كَانَ

अनकरीब तुम मग़लूब होगे	और तुम हाँके जाओगे	तरफ़	जहन्नम	और बुरा	ठिकाना	12	अलबत्ता	है
------------------------	--------------------	------	--------	---------	--------	----	---------	----

لَكُمْ آيَةٌ فِي فِتْنَتِي الثَّقَاتِ فِتْنَةُ ثَقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَأُخْرَىٰ

तुम्हारे लिए	एक निशानी	में	दो गिरोह	वह वाहम मुकाबिल हुए	एक गिरोह	लड़ता था	में	अल्लाह की राह	और दूसरा
--------------	-----------	-----	----------	---------------------	----------	----------	-----	---------------	----------

كَافِرَةٌ يَرَوْنَهُمْ مِثْلِهِمْ رَأَىٰ الْعَيْنِ وَاللَّهُ يُؤَيِّدُ بِنَصَرِهِ

काफ़िर	वह उन्हें दिखाई देते	उन के दो चन्द	खुली आँखें	और अल्लाह	ताईद करता है	अपनी मदद
--------	----------------------	---------------	------------	-----------	--------------	----------

مَنْ يَشَاءُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ (١٣)

जिसे	वह चाहता है	वेशक	में	उस	एक इव्रत	देखने वालों के लिए	13
------	-------------	------	-----	----	----------	--------------------	----

زَيْنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوَاتِ مِنَ النِّسَاءِ وَالْبَنِينَ وَالْقَنَاطِيرِ

खुशनुमा कर दी गई	लोगों के लिए	सुहव्वत	मरगूब चीज़ें	से (मसलन)	औरतें	और बेटे	और ढेर
------------------	--------------	---------	--------------	-----------	-------	---------	--------

الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْأَنْعَامِ

जमा किए हुए	से	सोना	और चाँदी	और घोड़े	निशान ज़दा	और मवेशी
-------------	----	------	----------	----------	------------	----------

وَالْحَرْثِ ذَٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَاللَّهُ عِنْدَهُ

और खेती	यह	साज़ ओ सामान	ज़िन्दगी	दुन्या	और अल्लाह	उस के पास
---------	----	--------------	----------	--------	-----------	-----------

حُسْنُ الْمَا (١٤) قُلْ أُوْنِيْكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذَٰلِكُمْ لِلَّذِينَ اتَّقَوْا

अच्छा	ठिकाना	14	कह दें	क्या मैं तुम्हें बताऊँ	बेहतर	से	उस	उन लोगों के लिए जो	परहेज़गार हैं
-------	--------	----	--------	------------------------	-------	----	----	--------------------	---------------

عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنَّاتٌ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ خَالِدِينَ فِيهَا وَأَزْوَاجٌ

पास	उन का रब	बागात	जारी है	से	उन के नीचे	नहरें	हमेशा रहेंगे	उस में	और बीबियाँ
-----	----------	-------	---------	----	------------	-------	--------------	--------	------------

مُطَهَّرَةٌ وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللَّهِ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ (١٥)

पाक	और खुशनुमी	से	अल्लाह	और अल्लाह	देखने वाला	बन्दों को	15
-----	------------	----	--------	-----------	------------	-----------	----

الَّذِينَ يَقُولُونَ رَبَّنَا اِنَّا اَمْنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوبَنَا وَقِنَا						
और हमें बचा	हमारे गुनाह	सो बख़्शदे हमें	ईमान लाए	वेशक हम	ऐ हमारे रब	कहते है
عَذَابِ النَّارِ (16) الصَّابِرِينَ وَالصَّادِقِينَ وَالْمُنْفِقِينَ						
और खर्च करने वाले	और हुक्म बजा लाने वाले	और सच्चे	सब्र करने वालो	16	दोज़ख	अज़ाब
وَالْمُسْتَغْفِرِينَ بِالْأَسْحَارِ (17) شَهِدَ اللَّهُ أَنَّهُ لَا إِلَهَ						
नहीं माबूद	कि वह	अल्लाह	गवाही दी	17	पिछली रात में	और बख़्शिश मांगने वाले
إِلَّا هُوَ وَالْمَلَائِكَةُ وَأُولُوا الْعِلْمِ قَائِمًا بِالْقِسْطِ						
इन्साफ़ के साथ	काईम (हाकिम)	और इल्म वाले	और फरिश्ते	सिवाए - उस		
لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (18) إِنَّ الدِّينَ						
दीन	वेशक	18	हिक्मत वाला	ज़बरदस्त	सिवाए उस	नहीं माबूद
عِنْدَ اللَّهِ الْإِسْلَامُ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ إِلَّا						
मगर	किताब दी गई	वह जिन्हें	इख़्तिलाफ़ किया	और नहीं	इस्लाम	अल्लाह के नज़दीक
مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا بَيْنَهُمْ وَمَنْ يَكْفُرْ						
इन्कार करे	और जो	आपस में	ज़िद	इल्म	जब आ गया उन के पास	बाद से
بِآيَةِ اللَّهِ فَإِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ (19) فَإِنْ حَاجُّوكَ فَقُلْ						
तो कह दें	वह आप से झगड़ें	फिर अगर	19	हिसाब	जल्द	हुक्म (जमा)
أَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلَّهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ وَقُلْ لِلَّذِينَ						
वह जो कि	और कह दें	मेरी पैरवी की	और जो - जिस	अल्लाह के लिए	अपना मुँह	मैं ने झुका दिया
أُوتُوا الْكِتَابَ وَالْأَمِّينَ ؕ أَسْلَمْتُمْ فَإِنْ أَسْلَمُوا فَقَدِ اهْتَدَوْا						
तो उन्होंने ने राह पा ली	वह इस्लाम लाए	पस अगर	क्या तुम इस्लाम लाए	और अन्पढ़	किताब दिए गए (अहले किताब)	
وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلْغُ ۚ وَاللَّهُ بَصِيرٌ بِالْعِبَادِ (20)						
20	बन्दों को	देखने वाला	और अल्लाह	पहुँचा देना	आप पर	तो सिर्फ़
إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَةِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيْنَ						
नवियों को	और क़त्ल करते है	अल्लाह	आयतों का	इन्कार करते है	वह जो	वेशक
بِغَيْرِ حَقٍّ وَيَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ						
लोगों से	इन्साफ़ का	हुक्म करते है	जो लोग	और क़त्ल करते है	नाहक़	
فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ (21) أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَبِطَتْ						
जाया हो गए	वह जो कि	यही	21	दर्दनाक	अज़ाब	सो उन्हें खुशख़बरी
أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَّصِيرِينَ (22)						
22	मददगार	कोई	उन का	और नहीं	और आखिरत	दुन्या में

जो लोग कहते हैं ऐ हमारे रब! वेशक हम ईमान लाए, सो हमें हमारे गुनाह बख्शदे, और हमें दोज़ख़ के अज़ाब से बचा। (16)

सब्र करने वाले सच्चे, हुक्म बजा लाने वाले, खर्च करने वाले और बख्शिश मांगने वाले पिछली रात में। (17)

अल्लाह ने गवाही दी कि उस के सिवा कोई माबूद नहीं, और फ़रिश्तों और इल्म वालों ने (भी), (वही) हाकिम है इन्साफ़ के साथ, उस के सिवा कोई माबूद नहीं, ज़बरदस्त हिक्मत वाला है। (18)

वेशक दीन अल्लाह के नज़दीक इस्लाम है, और जिन्हें किताब दी गई (अहले किताब) ने इख़्तिलाफ़ नहीं किया, मगर उस के बाद जब कि उन के पास आ गया इल्म, आपस की ज़िद से, और जो अल्लाह की आयात (हुक्मों) का इन्कार करे तो वेशक अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (19)

फिर अगर वह आप (स) से झगड़ें तो कह दें मैं ने अपना मुँह अल्लाह के लिए झुका दिया और जिस ने मेरी पैरवी की, और आप (स) अहले किताब और अन्पढ़ों से कह दें क्या तुम इस्लाम लाए? पस अगर वह इस्लाम ले आए तो उन्होंने ने राह पा ली, और अगर वह मुँह फेर लें तो आप पर सिर्फ़ पहुँचा देना है, और अल्लाह देखने वाला है (अपने) बन्दों को। (20)

वेशक जो लोग अल्लाह की आयतों का इन्कार करते हैं, और नवियों को क़त्ल करते हैं नाहक़, और उन्हें क़त्ल करते हैं जो लोग इन्साफ़ का हुक्म करते हैं, सो उन्हें दर्दनाक अज़ाब की खुशख़बरी दें। (21)

यही वह लोग हैं जिन के अमल ज़ाया हो गए दुन्या में और आखिरत में, और उन का कोई मददगार नहीं। (22)

क्या तुम ने उन लोगों को नहीं देखा? जिन्हें दिया गया किताब का एक हिस्सा, वह अल्लाह की किताब की तरफ बुलाए जाते हैं ता कि वह उन के दरमियान फ़ैसला करे, फिर उन का एक फ़रीक़ फिर जाता है, और वह सुँह फेरने वाले हैं। (23)

यह इस लिए है कि वह कहते हैं हमें (दोज़ख़) की आग़ हरगिज़ न छुएगी मगर गिनती के चन्द दिन, और उन्हें उन के दीन (के बारे) में धोके में डाल दिया उस ने जो वह घड़ते थे। (24)

सो क्या (हाल होगा) जब हम उन्हें उस दिन जमा करेंगे जिस में कोई शक़ नहीं, और हर शख्स पूरा पूरा पाएगा जो उस ने कमाया, और उन की हक़ तलफ़ी न होगी। (25)

आप कहें ऐ अल्लाह! मालिके मुल्क तू जिसे चाहे मुल्क दे, तू मुल्क छीन ले जिस से तू चाहे, और तू जिसे चाहे इज़्ज़त दे, और जिसे चाहे ज़लील कर दे, तेरे हाथ में तमाम भलाई है, वेशक़ तू हर चीज़ पर कादिर है। (26)

तू रात को दिन में दाख़िल करता है, और दाख़िल करता है दिन को रात में, और तू बेजान से जानदार निकालता है, और जानदार से बेजान निकालता है, और जिसे चाहे बेहिसाब रिज़ूक़ देता है। (27)

मोमिन न बनाएं मोमिनों को छोड़ कर काफ़िरों को दोस्त, और जो ऐसा करे तो उस का अल्लाह से कोई तअल्लुक़ नहीं, सिवाए इस के कि तुम उन से बचाव करो, और अल्लाह तुम्हें डराता है अपनी ज़ात से, और अल्लाह की तरफ़ लौट कर जाना है। (28)

कह दें जो कुछ तुम्हारे दिलों में है अगर तुम छुपाओ या उसे ज़ाहिर करो अल्लाह उसे जानता है, और वह जानता है जो कुछ आस्मानों में और ज़मीन में है और अल्लाह हर चीज़ पर कादिर है। (29)

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ الْكِتَابِ يُدْعَوْنَ إِلَىٰ								
तरफ	बुलाए जाते हैं	किताब	से	एक हिस्सा	दिया गया	वह लोग जो	तरफ (को)	क्या नहीं देखा
كِتَابِ اللَّهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلَّىٰ فَرِيقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُونَ ﴿٢٣﴾								
23	सुँह फेरने वाले	और वह	उन से	एक फ़रीक़	फिर जाता है	फिर	उन के दरमियान	ता कि वह फ़ैसला करे
ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا لَن تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَتٍ ۖ								
गिनती के		चन्द दिन	मगर	आग	हमें हरगिज़ न छुएगी	कहते हैं	इस लिए कि वह	यह
وَعَرَّهٖمْ فِي دِينِهِمْ مَا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٢٤﴾ فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنَهُمْ لِيَوْمٍ								
उस दिन	उन्हें हम जमा करेंगे	जब	सो क्या	24	वह घड़ते थे	जो	उन का दीन	में और उन्हें धोके में डाल दिया
لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٥﴾								
25	हक़ तलफ़ी न होगी	और वह	उस ने कमाया	जो	शख्स	हर	और पूरा पाएगा	उस में शक नहीं
قُلِ اللَّهُمَّ مِلْكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَن تَشَاءُ وَتَنزِعُ الْمُلْكَ								
मुल्क	और छीन ले	तू चाहे	जिसे	मुल्क	तू दे	मुल्क	मालिक	ऐ अल्लाह आप कहें
مِمَّن تَشَاءُ ۚ وَنُعِزُّ مَن تَشَاءُ وَنُزِلُ مَن تَشَاءُ ۚ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ۚ								
तमाम भलाई	तेरे हाथ में	तू चाहे	जिसे	और ज़लील कर दे	तू चाहे	जिसे	और इज़्ज़त दे	तू चाहे जिस से
إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٦﴾ تُولِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُولِجُ النَّهَارَ								
दिन	और दाखिल करता है तू	दिन में	रात	तू दाखिल करता है	26	कादिर	चीज़	हर पर वेशक तू
فِي اللَّيْلِ ۚ وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَمِيتِ وَتُخْرِجُ الْمَمِيتَ مِنَ الْحَيِّ ۚ								
जानदार	से	बेजान	और तू निकालता है	बेजान	से	जानदार	और तू निकालता है	रात में
وَتَرْزُقُ مَن تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٢٧﴾ لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُونَ								
मोमिन (जमा)	न बनाएं	27	बेहिसाब	तू चाहे	जिसे	और तू रिज़ूक़ देता है		
الْكَافِرِينَ أَوْلِيَاءَ مِن دُونِ الْمُؤْمِنِينَ ۚ وَمَن يَفْعَلْ ذَٰلِكَ								
ऐसा	करे	और जो	मोमिन (जमा)	अलावा (छोड़ कर)	दोस्त (जमा)	काफ़िर (जमा)		
فَلَيْسَ مِنَ اللَّهِ فِي شَيْءٍ إِلَّا أَن تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقَاةً ۚ								
बचाव	उन से	बचाव करो	कि	सिवाए	कोई तअल्लुक़	अल्लाह	से	तो नहीं
وَيَحْذَرُكُمُ اللَّهُ نَفْسَهُ ۚ وَاللَّهُ الْمَصِيرُ ﴿٢٨﴾ قُلْ إِن								
अगर तुम	कह दें	28	लौट जाना	अल्लाह	और तरफ़	अपनी ज़ात	अल्लाह	और डराता है तुम्हें
تُخْفُوا مَا فِي صُدُورِكُمْ أَوْ تُبْدُوهُ يَعْلَمُهُ اللَّهُ ۚ وَيَعْلَمُ مَا								
जो	और वह जानता है	अल्लाह	उसे जानता है	तुम ज़ाहिर करो	या	तुम्हारे सीने (दिल)	में	जो छुपाओ
فِي السَّمُوتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٩﴾								
29	कादिर	चीज़	हर	पर	और अल्लाह	ज़मीन में	और जो	आस्मानों में

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۖ وَمَا عَمِلَتْ مِنْ										
दिन	पाएगा	हर	शख्स	जो	उस ने की	से (कोई)	नेकी	मौजूद	और जो	उस ने की
से - कोई										
سُوءٍ ۚ تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ أَمَدًا بَعِيدًا ۗ وَيُحَذِّرُكُمُ اللَّهُ										
बुराई	आरजू करेगा	काश कि	उस के दरमियान	उस के दरमियान	और उस के दरमियान	फ़ासला	दूर	और तुम्हें डराता है	अल्लाह	
نَفْسَهُ ۗ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ ۝ (३०) قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّونَ اللَّهَ فَاتَّبِعُونِي										
अपनी ज्ञात	और अल्लाह	शफ़क़्त करने वाला	बन्दों पर	30	आप कह दें	अगर तुम हो	मुहब्बत रखते	अल्लाह	तो मेरी पैरवी करो	
يُحِبِّكُمْ اللَّهُ وَيَغْفِرَ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝ (३१)										
तुम से मुहब्बत करेगा	अल्लाह	और तुम्हें बख़्शदेगा	गुनाह तुम्हारे	और	बख़्शने वाला	रहम करने वाला	31			
قُلْ أَطِيعُوا اللَّهَ وَالرَّسُولَ ۚ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْكَافِرِينَ ۝ (३२)										
आप कह दें	तुम इताअत करो	अल्लाह	और रसूल	फिर अगर	वह फिर जाएं	तो वेशक	अल्लाह	नहीं दोस्त रखता	काफ़िर (जमा)	32
إِنَّ اللَّهَ اصْطَفَىٰ آدَمَ وَنُوحًا وَآلَ إِبْرَاهِيمَ وَآلَ عِمْرَانَ										
वेशक	अल्लाह	चुन लिया	आदम (अ)	और नूह (अ)	और इब्राहीम (अ)	और इमरान का घराना				
عَلَى الْعَالَمِينَ ۝ (३३) ذُرِّيَّتَهُ بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ ۗ وَاللَّهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝ (३४)										
पर	सारे जहान	33	औलाद	वह एक	से	दूसरे	और अल्लाह	सुनने वाला	जानने वाला	34
إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرَانَ رَبِّ إِنِّي نَذَرْتُ لَكَ مَا فِي بَطْنِي										
जब	कहा	इमरान की वीवी	ऐ मेरे रब	वेशक मैं	मैं ने नज़र किया	तेरे लिए	जो	मेरे पेट में		
مُحْزَرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّي ۚ إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ ۝ (३५) فَلَمَّا وَضَعَتْهَا										
आज़ाद किया हुआ	सो तू कुबूल कर ले	मुझ से	वेशक तू	तू	सुनने वाला	जानने वाला	35	सो जब	उस ने उस को जन्म दिया	
قَالَتْ رَبِّ إِنِّي وَضَعْتُهَا أُنْثَىٰ ۗ وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعْتَ ۖ										
उस ने कहा	ऐ मेरे रब	मैं ने	जन्म दी	लड़की	और अल्लाह	खूब जानता है	जो	उस ने जना		
وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنْثَىٰ ۖ وَإِنِّي سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ ۖ وَإِنِّي أُعِيذُهَا										
और नहीं	लड़का	मानिंद लड़की	और मैं	उस का नाम रखा	मरयम	और मैं	पनाह में देती हूँ उस को			
بِكَ وَذَرَيْتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ۝ (३६) فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ										
तेरी	और उस की औलाद	से	शैतान	मरदूद	36	तो कुबूल किया उस को	उस का रब	कुबूल		
حَسَنٍ وَانْتَبَتْهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۖ وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ۖ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا										
अच्छा	और परवान चढ़ाया उस को	बढ़ाना	अच्छा	और सुपुर्द किया उस को	ज़क़रिया (अ)	जिस वक़्त	दाख़िल होता	उस के पास		
زَكَرِيَّا الْمَحْرَابَ ۖ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۖ قَالَ يَمْرِئُ امْنِي لَكَ هَذَا ۖ										
ज़क़रिया (अ)	महराब (हुजरा)	पाया	उस के पास	खाना	उस ने कहा	ऐ मरयम	कहाँ	तेरे लिए	यह	
قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۖ إِنَّ اللَّهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝ (३७)										
उस ने कहा	यह	से	पास अल्लाह	वेशक	अल्लाह	रिज़्क देता है	जिसे	चाहे	बेहिसाब	37

जिस दिन हर शख्स (मौजूद) पाएगा जो उस ने की कोई नेकी, और जो उस ने कोई बुराई की। वह आरजू करेगा काश उस के दरमियान और उस (बुराई) के दरमियान दूर का फ़ासला होता, और अल्लाह तुम्हें अपनी ज्ञात से डराता है, और अल्लाह शफ़क़्त करने वाला है बन्दों पर। (30)

आप कह दें अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत रखते हो तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह तुम से मुहब्बत करेगा, और तुम्हारे गुनाह बख़्शदेगा, और अल्लाह बख़्शने वाला रहम करने वाला है। (31)

आप कह दें तुम इताअत करो अल्लाह की, और रसूल की, फिर अगर वह फिर जाएं तो वेशक अल्लाह काफ़िरों को दोस्त नहीं रखता। (32)

वेशक अल्लाह ने चुन लिया आदम (अ) और नूह (अ) को, और इब्राहीम (अ) ओ इमरान के घराने को, सारे जहान पर। (33)

वह औलाद थे एक दूसरे की, और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (34)

जब इमरान की वीवी ने कहा ऐ मेरे रब! जो मेरे पेट में है, मैं ने तेरी नज़र किया (सब से) आज़ाद रख कर, सो तू मुझ से कुबूल कर ले वेशक तू सुनने वाला, जानने वाला है। (35)

सो जब उस ने उस (मरयम) को जन्म दिया तो वह बोली ऐ मेरे रब! मैं ने जन्म दी है लड़की, और अल्लाह खूब जानता है जो उस ने जन्म दिया, और लड़का लड़की के मानिंद नहीं होता और मैं ने उस का नाम मरयम रखा, और मैं उस को और उस की औलाद को तेरी पनाह में देती हूँ शैतान मरदूद से। (36)

तो उस को उस के रब ने अच्छी तरह कुबूल किया और उस को अच्छी तरह परवान चढ़ाया और ज़क़रिया (अ) को उस का कफ़ील बनाया। जब भी ज़क़रिया (अ) उस के पास हुजरे में दाख़िल होते उस के पास खाना पाते,

उस (ज़क़रिया (अ) ने कहा ऐ मरयम! यह तेरे पास कहाँ से आया? उस ने कहा यह अल्लाह के पास से है, वेशक अल्लाह जिसे चाहे बेहिसाब रिज़्क देता है। (37)

वही ज़करिया (अ) ने अपने रब से दुआ की। ऐ मेरे रब! मुझे अपने पास से पाक औलाद अता कर, तू वेशक दुआ सुनने वाला है। (38)

तो उन्हें आवाज़ दी फ़रिश्तों ने जब वह हुजरे में खड़े हुए नमाज़ पढ़ रहे थे, कि अल्लाह तुम्हें यहया (अ) की खुशखबरी देता है अल्लाह के कलिमे की तसदीक करने वाला, सरदार, और नफ़्स को काबू रखने वाला, और नवी (होगा) नेकोकारों में से। (39)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! मेरे लड़का कहां से होगा? जब कि मुझे बुढ़ापा पहुँच चुका है, और मेरी औरत बांझ है, उस ने कहा इसी तरह अल्लाह जो चाहता है करता है (40)

उस ने कहा ऐ मेरे रब! मुक़र्रर फ़र्मा दे मेरे लिए कोई निशानी? उस ने कहा तेरी निशानी यह है कि तू लोगों से तीन दिन बात न करेगा, मगर इशारे से, तू अपने रब को बहुत याद कर, और सुबह ओ शाम तस्वीह कर। (41)

और जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम! वेशक अल्लाह ने तुझ को चुन लिया, और तुझ को पाक किया, और तुझ को बरगुज़ीदा किया औरतों पर तमाम जहान की। (42)

ऐ मरयम! तू अपने रब की फ़र्मावरदारी कर, और सिज्दा कर, और रकूअ कर, रकूअ करने वालों के साथ। (43)

यह ग़ैब की ख़बरें हैं, हम आप की तरफ़ वही करते हैं, और आप उन के पास न थे जब वह (कुरआ के लिए) अपने क़लम डाल रहे थे कि उन में से कौन मरयम की पर्वरिश करेगा? और आप (स) उन के पास न थे जब वह झगड़ते थे। (44)

जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरयम! वेशक अल्लाह तुझे अपने एक कलमे की बशारत देता है उस का नाम मसीह (अ) ईसा (अ) इब्ने मरयम है, दुन्या और आखिरत में बाआबर, और मुक़र्रिबों से होगा, (45)

هٰذَاكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ ۖ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ ذُرِّيَّةً									
वही	दुआ की	ज़करिया	अपना रब	उस ने कहा	ऐ मेरे रब	अता कर मुझे	से	अपने पास	औलाद
طَيِّبَةً ۚ إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ ﴿٣٨﴾ فَادَاتُهُ الْمَلَكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ									
पाक	वेशक तू	सुनने वाला	दुआ	38	तो आवाज़ दी उस को	फ़रिश्ता (जमा)	और वह	खड़े हुए	
يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ ۚ إِنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيَى مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ									
नमाज़ पढ़ने	में	महराब (हुजरा)	कि अल्लाह	तुम्हें खुशखबरी देता है	यहया (अ)	तसदीक करने वाला	कलिमा		
مِّنَ اللَّهِ وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِينَ ﴿٣٩﴾ قَالَ رَبِّ									
से	अल्लाह	और सरदार	और नफ़्स को काबू में रखने वाला	और नबी	से	नेकोकार (जमा)	39	उस ने कहा	ऐ मेरे रब
أَنِّي يَكُونُ لِي غُلَامٌ وَقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِي عَاقِرٌ ۖ									
कहां	होगा	मेरे लिए	लड़का	जब कि मुझे पहुँच गया	बुढ़ापा	और मेरी औरत	बांझ		
قَالَ كَذٰلِكَ اللَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ﴿٤٠﴾ قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيٓ آيَةً ۖ									
उस ने कहा	इसी तरह	अल्लाह	करता है	जो वह चाहता है	40	उस ने कहा	ऐ मेरे रब	मुक़र्रर फ़र्मा दे	मेरे लिए
قَالَ اٰيٰتُكَ اِلَّا تُكَلِّمُ النَّاسَ ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ اِلَّا رَمَزًا ۚ وَاذْكُرْ رَبَّكَ									
उस ने कहा	तेरी निशानी	कि न बात करेगा	लोग	तीन दिन	मगर	इशारा	और तू याद कर	अपना रब	
كَثِيْرًا وَسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ﴿٤١﴾ وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ									
बहुत	और तस्वीह कर	शाम	और सुबह	41	और जब	कहा	फ़रिश्ता (जमा)		
يَمْرِئِمُ ۚ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰكَ وَطَهَّرَكَ وَاصْطَفٰكَ عَلٰى									
ऐ मरयम	वेशक अल्लाह	चुन लिया तुझ को	और पाक किया तुझ को	और बरगुज़ीदा किया तुझ को	पर				
نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٢﴾ يَمْرِئِمُ اَفْنٰتِيْ لِرَبِّكَ وَاسْجُدِيْ وَارْكَعِيْ									
औरतें	तमाम जहान	42	ऐ मरयम	तू फ़र्मावरदारी कर	अपने रब की	और सिज्दा कर	और रकूअ कर		
مَعَ الرُّكْعٰتَيْنِ ﴿٤٣﴾ ذٰلِكَ مِنْ اَنْبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۖ									
साथ	रकूअ करने वाले	43	यह	से	ख़बरें	ग़ैब	हम यह वही करते हैं	तेरी तरफ़	
وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَيُّهُمْ يَكْفُلُ مَرْيَمَ ۚ									
और तू न था	उन के पास	जब	वह डालते थे	अपने क़लम	कौन-उन	पर्वरिश करे	मरयम		
وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٤٤﴾ اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يَمْرِئِمُ									
और न	तू न था	उन के पास	जब वह झगड़ते थे	44	जब कहा	फ़रिश्ते	ऐ मरयम		
اِنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۚ اِسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيسٰى ابْنُ مَرْيَمَ									
वेशक	अल्लाह	तुझे बशारत देता है	एक कलमा की	अपने	उस का नाम	मसीह (अ)	ईसा	इब्ने मरयम	
وَجِيْهًا فِى الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ﴿٤٥﴾									
बाआबर	में	दुन्या	और आखिरत	और से	मुक़र्रिब (जमा)	45			

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَمِنَ الصُّلَحِينَ ﴿٤٦﴾ قَالَتْ									
और बातें करेगा	लोग	गहवारे में	और पुख्ता उम्र	और से	नेकोकार	46	वह बोली		
رَبِّ أَنِّي يَكُونُ لِي وَلَدٌ وَلَمْ يَمَسِّنِي بَشَرٌ قَالَ كَذَلِكَ اللَّهُ									
ऐ मेरे रब	कैसे	होगा मेरे हां	बेटा	और नहीं	हाथ लगाया मुझे	कोई मर्द	उस ने कहा	इसी तरह	अल्लाह
يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ إِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٤٧﴾									
पैदा करता है	जो वह चाहता है	जब	वह इरादा करता है	कोई काम	तो	वह कहता है	उस को	हो जा	सो वह हो जाता है
47									
وَيُعَلِّمُهُ الْكِتَابَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرَةَ وَالْإِنْجِيلَ ﴿٤٨﴾ وَرَسُولًا إِلَىٰ									
और वह सिखाएगा उस को किताब	और दानाई	और तौरत	और इन्जील	48	और एक रसूल	तरफ			
بَنِي إِسْرَءِيلَ ۚ أَنِّي قَدْ جِئْتُكُمْ بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ ۚ أَنِّي أَخْلُقُ									
बनी इस्राईल	कि मैं	आया हूँ तुम्हारी तरफ	एक निशानी के साथ	से	तुम्हारा रब	कि मैं	वह	हूँ	वनाता हूँ
لَكُمْ مِّنَ الطَّيْنِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَأَنْفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِ									
तुम्हारे लिए	से	गारा	मानिंद - शक्ल	परिन्दा	फिर फूंक मारता हूँ	उस में	तो वह हो जाता है	परिन्दा	हुकम से
اللَّهِ ۚ وَأُبْرِئُ الْأَكْمَةَ وَالْأَبْرَصَ وَأُحْيِي الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ									
अल्लाह	और मैं अच्छा करता हूँ	मादरज़ाद अन्धा	और कोढ़ी को	और मैं ज़िन्दा करता हूँ	मुर्दे	हुकम से	अल्लाह		
وَأُنَبِّئُكُم بِمَا تَأْكُلُونَ وَمَا تَدَّخِرُونَ ۚ فَيُؤْتِكُمْ إِنَّا فِي ذَلِكَ									
और तुम्हें बताता हूँ	जो	तुम खाते हो	और जो	तुम ज़खीरा करते हो	मैं	घरों अपने	वेशक	मैं	उस
لَايَةً لَّكُمْ إِن كُنتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٤٩﴾ وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ									
एक निशानी	तुम्हारे लिए	अगर	तुम हो	ईमान वाले	49	और तसदीक करने वाला	जो	अपने से पहली	
مِّنَ التَّوْرَةِ وَلِأَحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِي حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ									
से	तौरत	और ता कि हलाल कर दूँ	तुम्हारे लिए	बाज़	वह जो कि	हराम की गई	तुम पर	हूँ तुम्हारे पास	और आया हूँ
بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۚ إِنَّ اللَّهَ رَبِّي وَرَبُّكُمْ									
एक निशानी	से	तुम्हारा रब	सो तुम डरो	अल्लाह	और मेरा कहा मानो	50	वेशक	अल्लाह	मेरा रब
فَاعْبُدُوهُ ۚ هَذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيمٌ ﴿٥١﴾ فَلَمَّا أَحَسَّ عِيسَىٰ									
सो तुम इबादत करो उस की	यह	रास्ता	सीधा	51	फिर जब	महसूस किया	ईसा (अ)		
مِنْهُمْ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ ۚ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ									
उन से	कुफ़	उस ने कहा	कौन	मेरी मदद करने वाला	तरफ	अल्लाह	कहा	हवारी (जमा)	
نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ ۚ آمَنَّا بِاللَّهِ وَأَشْهَدُ بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٥٢﴾ رَبَّنَا آمَنَّا									
हम	मदद करने वाले	अल्लाह	हम ईमान लाए	अल्लाह पर	तू गवाह रह	कि हम	फर्मावरदार	52	ऐ हमारे रब
بِمَا أَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُولَ ۚ فَاكْتُبْنَا مَعَ الشَّاهِدِينَ ﴿٥٣﴾									
जो	तू ने नाज़िल किया	और हम ने पैरवी की	रसूल	सो तू हमें लिख ले	साथ	गवाही देने वाले	53		

और लोगों से गहवारे में और पुख्ता उम्र में बातें करेगा और नेकोकारों में से होगा। (46)

वह बोली ऐ मेरे रब! मेरे हां बेटा कैसे होगा? और किसी मर्द ने मुझे हाथ नहीं लगाया, उस ने कहा इसी तरह अल्लाह जो चाहे पैदा करता है, जब वह किसी काम का इरादा करता है तो वह कहता है उस को “हो जा” सो वह हो जाता है। (47)

और वह उस को सिखाएगा किताब, और दानाई, और तौरत, और इन्जील। (48)

और बनी इस्राईल की तरफ एक रसूल, (वह कहेगा) कि मैं तुम्हारी तरफ एक निशानी के साथ आया हूँ तुम्हारे रब की तरफ से, मैं तुम्हारे लिए गारे से परिन्दे जैसी शक्ल बनाता हूँ, फिर उस में फूंक मारता हूँ तो वह अल्लाह के हुकम से परिन्दा हो जाता है, और मैं अच्छा करता हूँ मादरजाद अन्धे और कोढ़ी को, और मैं अल्लाह के हुकम से मुर्दे ज़िन्दा करता हूँ, और मैं तुम्हें बताता हूँ जो तुम खाते हो और जो तुम अपने घरों में ज़खीरा करते हो, वेशक उस में तुम्हारे लिए एक निशानी है, अगर तुम हो ईमान वाले। (49)

और मैं अपने से पहली (किताब) तौरत की तसदीक करने वाला हूँ और ता कि तुम्हारे लिए बाज़ वह चीज़ें हलाल कर दूँ जो तुम पर हaram की गई थी, और तुम्हारे पास एक निशानी के साथ आया हूँ तुम्हारे रब से, सो तुम अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो। (50)

वेशक अल्लाह (ही) मेरा और तुम्हारा रब है सो तुम उस की इबादत करो, यह सीधा रास्ता है, (51)

फिर जब ईसा (अ) ने महसूस किया उन से कुफ़ (तो) कहा कौन है अल्लाह की तरफ मेरी मदद करने वाला? हवारियों ने कहा हम अल्लाह की मदद करने वाले हैं, हम अल्लाह पर ईमान लाए, और गवाह रह कि हम फर्मावरदार हैं, (52)

ऐ हमारे रब! हम उस पर ईमान लाए जो तू ने नाज़िल किया और हम ने रसूल की पैरवी की, सो तू हमें गवाही देने वालों के साथ लिख ले (53)

और उन्होंने ने मकर किया और अल्लाह ने खुफिया तदबीर की, और अल्लाह (सब) तदबीर करने वालों से बेहतर है। (54)

जब अल्लाह ने कहा ऐ ईसा (अ) मैं तुझे कब्ज़ कर लूँगा, और तुझे अपनी तरफ उठा लूँगा, और तुझे पाक कर दूँगा उन लोगों से जिन्होंने ने कुफ़ किया, और जिन्होंने ने तेरी पैरवी की उन्हें उन के ऊपर (ग़ालिब) रखूँगा, जिन्होंने ने कुफ़ किया क़ियामत के दिन तक। फिर तुम्हें मेरी तरफ लौट कर आना है, फिर मैं तुम्हारे दरमियान फ़ैसला करूँगा जिस (बारे) में तुम इख़्तिलाफ़ करते थे। (55)

पस जिन लोगों ने कुफ़ किया, सो उन्हें सख़्त अज़ाब दूँगा दुन्या और आख़िरत में, और उन का कोई मददगार न होगा। (56)

और जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने ने नेक काम किए तो (अल्लाह) उन के अजर उन्हें पूरे देगा, और अल्लाह दोस्त नहीं रखता ज़ालिमों को। (57)

हम आप (स) पर यह आयतें और हिक्मत वाली नसीहत पढ़ते हैं। (58)

वेशक अल्लाह के नज़दीक ईसा (अ) की मिसाल आदम (अ) जैसी है, उसे मिट्टी से पैदा किया, फिर कहा उस को “हो जा” तो वह हो गया। (59)

हक़ आप के रब की तरफ़ से है, पस शक़ करने वालों में से न होना। (60)

जो आप (स) से इस बारे में झगड़े उस के बाद जब कि आप के पास इल्म आगया तो आप (स) कह दें! आओ हम बुलाएं अपने बेटे और तुम्हारे बेटे, और अपनी औरतें और तुम्हारी औरतें, और हम खुद और तुम खुद (भी) फिर हम सब इलतिजा करें, फिर झूठों पर अल्लाह की लानत भेजें। (61)

वेशक यही सच्चा बयान है, और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, और वेशक अल्लाह ही ग़ालिब, हिक्मत वाला है। (62)

وَمَكُرُوا وَمَكَرَ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَكِرِينَ ﴿٥٤﴾ إِذْ قَالَ اللَّهُ								
और उन्होंने ने	और खुफिया तदबीर की	अल्लाह	और अल्लाह	बेहतर	तदबीर करने वाले हैं	54	जब	कहा
يَعِيسَى إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ								
ऐ ईसा (अ)	मैं	कब्ज़ कर लूँगा तुझे	और उठा लूँगा तुझे	अपनी तरफ़	और पाक कर दूँगा तुझे	से	वह लोग जो	वह लोग जो
كَفَرُوا وَجَاعِلُ الَّذِينَ اتَّبَعُوكَ فَوْقَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِلَى								
उन्होंने ने कुफ़ किया	और रखूँगा	वह जिन्होंने ने	तेरी पैरवी की	ऊपर	जिन्होंने ने	कुफ़ किया	तक	तक
يَوْمِ الْقِيَمَةِ ثُمَّ إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنْتُمْ								
क़ियामत का दिन	फिर	मेरी तरफ़	तुम्हें लौट कर आना है	फिर मैं फ़ैसला करूँगा	तुम्हारे दरमियान	जिस में	तुम थे	तुम थे
فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٥٥﴾ فَأَمَّا الَّذِينَ كَفَرُوا فَأَعَذِّبُهُمْ عَذَابًا								
में	इख़्तिलाफ़ करते	55	पस	जिन लोगों ने	कुफ़ किया	सो उन्हें अज़ाब दूँगा	अज़ाब	अज़ाब
شَدِيدًا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَّاصِرِينَ ﴿٥٦﴾								
सख़्त	दुन्या में	और आख़िरत	और नहीं	उन का	से	मददगार	56	56
وَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ فَيُوَفِّيهِمْ أُجُورَهُمْ								
और जो	जो लोग	ईमान लाए	और उन्होंने ने काम किए	नेक	तो पूरा देगा	उन के अजर		
وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الظَّالِمِينَ ﴿٥٧﴾ ذَلِكَ نَثَلُوهَ عَلَيْكَ مِنَ الْآيَاتِ								
और अल्लाह	दोस्त नहीं रखता	ज़ालिम (जमा)	57	यह	हम पढ़ते हैं	आप (स) पर	से	आयतें
وَالذِّكْرِ الْحَكِيمِ ﴿٥٨﴾ إِنَّ مَثَلَ عِيسَىٰ عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ خَلَقَهُ								
और नसीहत	हिक्मत वाली	58	वेशक	मिसाल	ईसा	अल्लाह के नज़दीक	मिसाल जैसी	आदम
مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٥٩﴾ الْحَقُّ مِنْ رَبِّكَ فَلَا								
से	मिट्टी	फिर	कहा	उस को	हो जा	सो वह हो गया	59	हक़
تَكُنْ مِنَ الْمُؤْمِرِينَ ﴿٦٠﴾ فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ								
हो	से	शक़ करने वाले	60	सो जो	आप से झगड़े	उस में	से	बाद
مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا								
से	इल्म	तो कह दें	तुम आओ	हम बुलाएं	अपने बेटे	और तुम्हारे बेटे	और अपनी औरतें	और अपनी औरतें
وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَعْنَتَ اللَّهِ								
और तुम्हारी औरतें	और हम खुद	और तुम खुद	फिर	हम इलतिजा करें	फिर करें (डालें)	लानत	अल्लाह	अल्लाह
عَلَى الْكَذِبِينَ ﴿٦١﴾ إِنَّ هَذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ وَمَا								
पर	झूटे	61	वेशक	यह	यही	बयान	सच्चा	और नहीं
مِنْ إِلَهٍ إِلَّا اللَّهُ وَإِنَّ اللَّهَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ﴿٦٢﴾								
कोई माबूद	अल्लाह के सिवा	और वेशक	अल्लाह	वही	ग़ालिब	हिक्मत वाला	62	62

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ بِالْمُفْسِدِينَ ﴿٦٣﴾ قُلْ								
फिर अगर	वह फिर जाएं	तो वेशक	अल्लाह	जानने वाला	फ़साद करने वालों को	63	आप कह दें	
يَاهِلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ								
ऐ अहले किताब	आओ	तरफ़ (पर)	एक बात	बराबर	हमारे दरमियान	और तुम्हारे दरमियान	कि न हम इबादत करें	
إِلَّا اللَّهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا								
सिवाए	अल्लाह	और न हम शरीक करें	उस के साथ	कुछ	और न बनाए	हम में से कोई	किसी को	रब (जमा)
مِّنْ دُونِ اللَّهِ فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُولُوا اشْهَدُوا بِأَنَّا مُسْلِمُونَ ﴿٦٤﴾								
सिवाए	अल्लाह	फिर अगर	वह फिर जाएं	तो कह दो तुम	तुम गवाह रहो	कि हम	मुसलिम (फर्मावरदार)	64
يَاهِلَ الْكِتَابِ لِمَ تُحَاجُّونَ فِي إِبْرَاهِيمَ وَمَا أُنْزِلَتِ التَّوْرَةُ								
ऐ अहले किताब	क्यों	तुम झगड़ते हो	में	इब्राहीम (अ)	और नहीं	नाज़िल की गई	तौरत	
وَالْإِنْجِيلَ إِلَّا مِنْ بَعْدِهِ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ﴿٦٥﴾ هَآنِثُمْ								
और इन्जील	मगर	उस के बाद	तो क्या तुम अक्ल नहीं रखते	65	हां तुम			
هَؤُلَاءِ حَاجُّوْكُمْ فِيمَا لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ فَلِمَ								
वह लोग	तुम ने झगड़ा किया	जिस में	तुम्हें	उस का	इल्म	अब क्यों		
تُحَاجُّونَ فِيمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ								
तुम झगड़ते हो	उस में	नहीं	तुम्हें	उस का	कुछ इल्म	और अल्लाह	जानता है	और तुम
لَا تَعْلَمُونَ ﴿٦٦﴾ مَا كَانَ إِبْرَاهِيمَ يَهُودِيًّا وَلَا نَصْرَانِيًّا								
नहीं	जानते	66	न थे	इब्राहीम (अ)	यहूदी	और न	नसरानी	
وَلَكِنْ كَانَ حَنِيفًا مُّسْلِمًا وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ ﴿٦٧﴾								
और लेकिन	वह थे	एक रुख़	मुसलिम (फर्मावरदार)	और न	थे	से	मुशरिक (जमा)	67
إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرَاهِيمَ لَلَّذِينَ اتَّبَعُوهُ وَهَذَا								
वेशक	सब से ज़ियादा मुनासिबत	लोग	इब्राहीम (अ)	उन लोग	उन्होंने ने पैरवी की उन की	और इस		
النَّبِيُّ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِينَ ﴿٦٨﴾								
नबी	और वह लोग जो	ईमान लाए	और अल्लाह	कारसाज़	मोमिन (जमा)	68		
وَدَّتْ طَائِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ لَوْ يُضِلُّوكُمْ								
चाहती है	एक जमाअत	से (की)	अहले किताब	काश	वह गुमराह कर दें तुम्हें			
وَمَا يُضِلُّونَ إِلَّا أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿٦٩﴾								
और नहीं वह गुमराह करते	मगर	अपने आप	और नहीं	वह समझते	69			
يَاهِلَ الْكِتَابِ لِمَ تَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُونَ ﴿٧٠﴾								
ऐ अहले किताब	क्यों	तुम इन्कार करते हो	आयतों का	अल्लाह	हालाकि तुम	गवाह हो	70	

फिर अगर वह फिर जाएं तो वेशक अल्लाह फसाद करने वालों को खूब जानता है। (63)

आप (स) कह दें ऐ अहले किताब! उस एक बात पर आओ जो हमारे और तुम्हारे दरमियान बराबर (मुशतरिक) है कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें, और उस के साथ किसी को शरीक न ठहराएं, और हम में से कोई किसी को न बनाए रब अल्लाह के सिवा, फिर अगर वह फिर जाएं तुम कह दो कि तुम गवाह रहो कि हम तो मुस्लिम (फर्मावरदार) हैं। (64)

ऐ अहले किताब! तुम इब्राहीम (अ) के बारे में क्यों झगड़ते हो? और नहीं नाज़िल की गई तौरत और इन्जील मगर उन के बाद, तो क्या तुम अक्ल नहीं रखते? (65)

हां! तुम वही लोग हो तुम ने उस (वारे) में झगड़ा किया जिस का तुम्हें इल्म था तो अब क्यों झगड़ते हो उस (वारे) में जिस का तुम्हें कुछ इल्म नहीं, और अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते। (66)

इब्राहीम (अ) न यहूदी थे, न नसरानी, (बल्कि) वह हनीफ़ (सब से रुख मोड़ कर अल्लाह के हो जाने वाले) मुस्लिम (फर्मावरदार) थे, और वह मुश्रिकों में से न थे। (67)

वेशक सब लोगों से ज़ियादा मुनासिबत है इब्राहीम (अ) से उन लोगों को जिन्होंने उन की पैरवी की, और इस नबी को और वह लोग जो ईमान लाए, और अल्लाह मोमिनों का कारसाज़ है। (68)

अहले किताब की एक जमाअत चाहती है काश! वह तुम्हें गुमराह कर दें, और वह अपने सिवा किसी को गुमराह नहीं करते, और वह समझते नहीं। (69)

ऐ अहले किताब! तुम क्यों इन्कार करते हो अल्लाह की आयतों का? हालांकि तुम गवाह हो। (70)

ऐ अहले किताब! तुम क्यों मिलते हो सच को झूट के साथ, और तुम हक को छुपाते हो, हालांकि तुम जानते हो। (71)

और एक जमाअत ने कहा अहले किताब की कि जो कुछ मुसलमानों पर नाज़िल किया गया है, उसे दिन के अक्ल हिस्से में मान लो और मुन्किर हो जाओ उस के अखिर हिस्से में (शाम को) शायद कि वह फिर जाए। (72)

और तुम (किसी की बात) न मानो सिवाए उस के जो पैरवी करे तुम्हारे दीन की, आप (स) कह दें बेशक हिदायत अल्लाह ही की हिदायत है, कि किसी को दिया गया जैसा कि तुम्हें दिया गया, या वह तुम से तुम्हारे रब के सामने हुज्जत करें, आप (स) कह दें, बेशक फ़ज़ल अल्लाह के हाथ में है, वह देता है जिस को वह चाहता है, और अल्लाह बुस्अत वाला, जानने वाला है। (73)

वह जिस को चाहता है अपनी रहमत से ख़ास कर लेता है, और अल्लाह बड़े फ़ज़ल वाला है। (74)

और अहले किताब में कोई (ऐसा है) कि अगर आप (स) उस के पास अमानत रखें ढेरों माल तो वह आप (स) को अदा करदे, और उन में से कोई (ऐसा है) अगर आप उस के पास एक दीनार अमानत रखें तो वह अदा न करे मगर जब तक आप (स) उस के सर पर खड़े रहें, यह इस लिए है कि उन्होंने ने कहा हम पर उम्मीयों के (वारे) में (इल्ज़ाम की) कोई राह नहीं, और वह अल्लाह पर झूट बोलते हैं, और वह जानते हैं। (75)

क्यों नहीं? जो कोई अपना इक़्रार पूरा करे, और परहेज़गार रहे, तो बेशक अल्लाह परहेज़गारों को दोस्त रखता है। (76)

बेशक जो लोग अल्लाह के इक़्रार और अपनी क़स्मों से हासिल करते हैं थोड़ी कीमत, यही लोग हैं जिन के लिए अख़िरत में कोई हिस्सा नहीं, और न अल्लाह उन से कलाम करेगा, और न उन की तरफ़ नज़र करेगा क़ियामत के दिन, और न उन्हें पाक करेगा, और उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है। (77)

يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لِمَ تَلْبِسُونَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُونَ الْحَقَّ							
हक	और तुम छुपाते हो	झूट के साथ	सच	तुम मिलाते हो	क्यों	ऐ अहले किताब	
وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٧١﴾ وَقَالَتْ طَافِيَةُ مِّنْ أَهْلِ الْكِتَابِ آمِنُوا بِالَّذِي							
जो कुछ	तुम मान लो	अहले किताब	से (की)	एक जमाअत	और कहा	71	तुम जानते हो हालांकि
أُنْزِلَ عَلَى الَّذِينَ آمَنُوا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوا آخِرَهُ لَعَلَّهُمْ							
शायद	उस का अखिर (शाम)	और मुन्किर हो जाओ	अक्ल हिस्सा दिन	जो लोग ईमान लाए (मुसलमान)		पर	नाज़िल किया गया
يَرْجِعُونَ ﴿٧٢﴾ وَلَا تُؤْمِنُوا إِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِينَكُمْ قُلْ إِنَّ الْهُدَى							
हिदायत	बेशक	कह दें	तुम्हारा दीन	पैरवी करे	उस की जो	सिवाए	मानो तुम और न 72 वह फिर जाएं
هُدَى اللَّهِ أَنْ يُؤْتَى أَحَدٌ مِّثْلَ مَا أُوتِيْتُمْ أَوْ يُحَاجُّوكُمْ							
वह हुज्जत करें तुम से	या	कुछ तुम्हें दिया गया	जैसा	किसी को	दिया गया	कि	अल्लाह हिदायत
عِنْدَ رَبِّكُمْ قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ							
वह चाहता है	जिसे	वह देता है	अल्लाह के हाथ में	फ़ज़ल	बेशक	कह दें	तुम्हारा रब सामने
وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٧٣﴾ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهِ مَنْ يَشَاءُ							
वह चाहता है	जिसे	अपनी रहमत से	वह ख़ास कर लेता है	73	जानने वाला	बुस्अत वाला	और अल्लाह
وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ ﴿٧٤﴾ وَمِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مَنْ إِن تَأْمَنهُ							
अगर अमानत रखें उस को	जो	अहले किताब	और से	74	बड़ा - बड़े	फ़ज़ल वाला	और अल्लाह
بِقِنْطَارٍ يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَنْ إِن تَأْمَنهُ بِدِينَارٍ							
एक दीनार	आप अमानत रखें उस को	अगर	और उन से जो	आप को	अदा करे	ढेर माल	
لَا يُؤَدِّهِ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَائِمًا ذَلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوا							
उन्होंने ने कहा	इस लिए कि	यह	खड़े	उस पर	तक रहें	मगर जब	आप को वह अदा न करे
لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأَمِينِ سَبِيلٌ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبَ							
झूट	अल्लाह	पर	और वह बोलते हैं	कोई राह	उम्मी (जमा)	में	हम पर नहीं
وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٥﴾ بَلَى مَنْ أَوْفَى بِعَهْدِهِ وَاتَّقَى فَإِنَّ اللَّهَ							
अल्लाह	तो बेशक	और परहेज़गार रहे	अपना इक़रार	पूरा करे	जो	क्यों नहीं? 75	जानते हैं और वह
يُحِبُّ الْمُتَّقِينَ ﴿٧٦﴾ إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا							
कीमत	और अपनी क़स्में	अल्लाह का इक़रार	खरीदते (हासिल करते) हैं	जो लोग	बेशक	76 परहेज़गार (जमा)	दोस्त रखता है
قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ وَلَا							
और न	अल्लाह	उन से कलाम करेगा	और न	आख़िरत में	उन के लिए	हिस्सा	नहीं यही लोग थोड़ी
يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَمَةِ وَلَا يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿٧٧﴾							
77	दर्दनाक	अज़ाब	और उन के लिए	उन्हें पाक करेगा	और न	क़ियामत के दिन	उन की तरफ़ नज़र करेगा

وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيقًا يَلُونُ السِّنْتَهِمْ بِالْكِتَابِ لِتَحْسَبُوهُ						
और	उन से (उन में)	एक फरीक	मरोड़ते हैं	अपनी ज़वानें	किताब में	ता कि तुम समझो
مِّنَ الْكِتَابِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتَابِ وَيَقُولُونَ هُوَ مِنْ						
से	किताब	और नहीं	वह	से	किताब	और वह कहते हैं
عِنْدَ اللَّهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللَّهِ وَيَقُولُونَ عَلَى اللَّهِ الْكَذِبُ						
तरफ	अल्लाह	हालांकि नहीं	वह	से	तरफ	अल्लाह
وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿٧٨﴾ مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُؤْتِيَهُ اللَّهُ الْكِتَابَ						
और वह	वह जानते हैं	78	नहीं	किसी आदमी के लिए	कि	उसे अता करे
وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُولُ لِلنَّاسِ كُونُوا عِبَادًا لِّي						
और हिक्मत	और नबूखत	फिर	वह कहे	लोगों को	तुम हो जाओ	मेरे वन्दे
مِّنْ دُونِ اللَّهِ وَلَكِنْ كُونُوا رَبَّيْنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُونَ الْكِتَابَ						
सिवा (बजाए)	अल्लाह	और लेकिन	तुम हो जाओ	अल्लाह वाले	इस लिए कि	तुम सिखाते हो
وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُونَ ﴿٧٩﴾ وَلَا يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا						
और इस लिए कि	तुम पढ़ते हो	79	और न	हुक्म देगा तुम्हें	कि	तुम ठहराओ
الْمَلَائِكَةَ وَالنَّبِيِّنَ أَرْبَابًا أَيَأْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ						
फरिश्ते	और नबी	परवरदिगार	क्या वह तुम्हें हुक्म देगा?	कुफ़ का	वाद	
إِذْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ﴿٨٠﴾ وَإِذْ أَخَذَ اللَّهُ مِيثَاقَ النَّبِيِّنَ لَمَا						
जब	तुम	मुसलमान	80	और जब	लिया	अल्लाह
اتَّبَعْتُمْ مِّنْ كِتَابٍ وَحِكْمَةٍ ثُمَّ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مُّصَدِّقٌ						
मैं तुम्हें दूँ	से	किताब	और हिक्मत	फिर	आए तुम्हारे पास	रसूल
لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهِ وَلَتَنْصُرُنَّهُ قَالَ أَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ						
जो	तुम्हारे पास	तुम ज़रूर ईमान लाओगे	उस पर	और तुम ज़रूर मदद करोगे उस की	उस ने फरमाया	क्या तुम ने इक्कार किया
عَلَىٰ ذَلِكُمْ إِصْرِي ۖ قَالُوا أَقْرَرْنَا ۖ قَالَ فَاشْهَدُوا ۖ وَأَنَا مَعَكُمْ						
पर	उस	मेरा अहद	उन्होंने ने कहा	हम ने इक्कार किया	उस ने फरमाया	पस तुम गवाह रहो
مِّنَ الشَّاهِدِينَ ﴿٨١﴾ فَمَنْ تَوَلَّىٰ بَعْدَ ذَلِكَ فَأُولَٰئِكَ هُمُ						
से	गवाह (जमा)	81	फिर जो	फिर जाए	वाद	उस
الْفَاسِقُونَ ﴿٨٢﴾ أَفَغَيْرَ دِينِ اللَّهِ يَبْغُونَ وَلَٰهُ أَسْلَمَ مَن						
नाफरमान	82	क्या? सिवा	दीन	अल्लाह	वह ढूँडते हैं	और उस के लिए
فِي السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَكَرْهًا ۖ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُونَ ﴿٨٣﴾						
में	आस्मानों	और ज़मीन	खुशी से	और नाखुशी से	और उस की तरफ	वह लौटाए जाएंगे

और वेशक उन में एक फरीक है जो किताब (पढ़ते वक़्त) अपनी ज़वानें मरोड़ते हैं, ताकि तुम समझो कि वह किताब से है, हालांकि वह किताब से नहीं (होता), और वह कहते हैं कि वह अल्लाह की तरफ से है, हालांकि वह नहीं अल्लाह की तरफ से, और अल्लाह पर झूट बोलते हैं, और वह जानते हैं। (78)

किसी आदमी के लिए (यह शायान) नहीं कि अल्लाह उसे किताब, और हिक्मत, और नबूखत अता करे, फिर वह लोगों को कहे कि तुम अल्लाह के बजाए मेरे वन्दे हो जाओ, लेकिन (वह यह कहेगा कि) तुम अल्लाह वाले हो जाओ, इस लिए कि तुम किताब सिखाते हो और तुम खुद (भी) पढ़ते हो। (79)

और न वह तुम्हें हुक्म देगा कि तुम फरिश्तों और नबियों को परवरदिगार ठहराओ, क्या वह तुम्हें हुक्म देगा कुफ़ का? इस के बाद कि तुम मुसलमान (फर्मावरदार) हो चुके। (80)

और जब अल्लाह ने अहद लिया नबियों से कि जो कुछ मैं तुम्हें किताब और हिक्मत दूँ, फिर तुम्हारे पास रसूल आए, उस की तसदीक करता हुआ जो तुम्हारे पास है तो तुम उस पर ज़रूर ईमान लाओगे, और ज़रूर उस की मदद करोगे, उस ने फरमाया क्या तुम ने इक्कार किया? और तुम ने उस पर मेरा अहद कुबूल क्या? उन्होंने ने कहा कि हम ने इक्कार किया, उस ने फरमाया पस तुम गवाह रहो, और मैं तुम्हारे साथ गवाहों में से हूँ। (81)

फिर जो उस के बाद फिर जाए तो वही नाफरमान है। (82)

क्या वह अल्लाह के दीन के सिवा (कोई और दीन) चाहते हैं? और उसी का फर्मावरदार है जो आस्मानों और ज़मीन में है, चार ओ नाचार, और उसी की तरफ वह लौटाए जाएंगे। (83)

कह दें हम ईमान लाए अल्लाह पर, और जो हम पर नाज़िल किया गया, और जो नाज़िल किया गया इब्राहीम (अ), इस्माईल (अ), इसहाक (अ), याकूब (अ), और उन की औलाद पर, और जो दिया गया मूसा (अ) और ईसा (अ) और नबियों को, उन के रब की तरफ से, हम फर्क नहीं करते उन में से किसी एक के दरमियान, और हम उसी के फर्मावरदार हैं। (84)

और जो कोई चाहेगा इस्लाम के सिवा कोई और दीन, तो उस से हरगिज़ कुबूल न किया जाएगा, और वह आखिरत में नुक्सान उठाने वालों में से होगा। (85)

अल्लाह ऐसे लोगों को क्योंकर हिदायत देगा जो काफ़िर हो गए अपने ईमान के बाद, और गवाही दे चुके कि यह रसूल सच्चे हैं, और उन के पास खुली निशानियां आ गई, और अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं देता। (86)

ऐसे लोगों की सज़ा है कि उन पर लानत है अल्लाह की और फ़रिश्तों की और तमाम लोगों की, (87)

वह उस में हमेशा रहेंगे। न उन से अज़ाब हलका किया जाएगा, और न उन्हें मुहलत दी जाएगी। (88)

मगर जिन लोगों ने उस के बाद तौबा की, और इस्लाम की, तो वेशक अल्लाह बख़्शने वाला, रहम करने वाला है। (89)

वेशक जो लोग काफ़िर हो गए अपने ईमान के बाद, फिर बढ़ते गए कुफ़ में, उन की तौबा हरगिज़ न कुबूल की जाएगी, और वही लोग गुमराह हैं। (90)

वेशक जिन लोगों ने कुफ़ किया, और वह मर गए हालते कुफ़ में, तो हरगिज़ न कुबूल किया जाएगा उन में से किसी से ज़मीन भर सोना भी, अगरचे वह उस को बदले में दे, यही लोग हैं उन के लिए दर्दनाक अज़ाब है, और उन के लिए कोई मददगार नहीं। (91)

قُلْ آمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَا أُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ									
कह दें	हम ईमान लाए	अल्लाह पर	और जो	हम पर	नाज़िल किया गया	और जो	नाज़िल किया गया	पर	इब्राहीम (अ)
وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ									
और इस्माईल (अ)	और इसहाक (अ)	और याकूब (अ)	और औलाद	और जो	दिया गया	मूसा (अ)			
وَعِيسَىٰ وَالْيَسُوعَ مِنْ رَبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ وَنَحْنُ									
और ईसा (अ)	और नबी (जमा)	से	उन का रब	नहीं	फर्क करते	दरमियान	कोई एक	उन से	और हम
لَهُ مُسْلِمُونَ ﴿٨٤﴾ وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِينًا فَلَنْ يُقْبَلَ مِنْهُ ۚ									
उसी के	फर्मावरदार	84	और जो	चाहेगा	सिवा	इस्लाम	कोई दीन	तो हरगिज़ न	उस से कुबूल किया जाएगा
وَهُوَ فِي الْآخِرَةِ مِنَ الْخَسِرِينَ ﴿٨٥﴾ كَيْفَ يَهْدِيَ اللَّهُ									
और वह	में	आखिरत	से	नुक्सान उठाने वाले	85	क्योंकर	हिदायत देगा	अल्लाह	
قَوْمًا كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ وَشَهِدُوا أَنَّ الرَّسُولَ حَقٌّ وَجَاءَهُمُ									
ऐसे लोग जो काफ़िर हो गए	बाद	उन का (अपना) ईमान	और उन्होंने ने गवाही दी	कि	रसूल	सच्चे	और आएँ उन के पास		
الْبَيِّنَاتُ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿٨٦﴾ أُولَٰئِكَ جَزَاءُهُمْ									
खुली निशानियाँ	और अल्लाह	नहीं	हिदायत देता	लोग	ज़ालिम (जमा)	86	ऐसे लोग	उन की सज़ा	
أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللَّهِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ ﴿٨٧﴾									
कि	उन पर	लानत	अल्लाह	और फ़रिश्ते	और लोग	तमाम	87		
خَالِدِينَ فِيهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُونَ ﴿٨٨﴾									
हमेशा रहेंगे	उस में	न	हलका किया जाएगा	उन से	अज़ाब	और न	उन्हें	सुहलत दी जाएगी	88
إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا ۗ فَإِنَّ اللَّهَ									
मगर	जो लोग	तौबा की	बाद	उस	और इस्लाम की	तो वेशक	अल्लाह		
غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٨٩﴾ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ									
बख़्शने वाला	रहम करने वाला	89	वेशक	जो लोग	काफ़िर हो गए	बाद	अपने ईमान	फिर	
ازْدَادُوا كُفْرًا لَّنْ تَقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ الضَّالُّونَ ﴿٩٠﴾									
बढ़ते गए	कुफ़ में	हरगिज़ न	कुबूल की जाएगी	उन की तौबा	और वही लोग	वह	गुमराह	90	
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَمَاتُوا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُقْبَلَ									
वेशक	जो लोग	कुफ़ किया	और वह मर गए	और वह	हालते कुफ़	तो हरगिज़ न	कुबूल किया जाएगा		
مِنْ أَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا وَلَوْ افْتَدَىٰ بِهِ ۗ									
से	उन में कोई	भरा हुआ	ज़मीन	सोना	अगरचे	बदला दे	उस को		
أُولَٰئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۖ وَمَا لَهُمْ مِنْ نَّاصِرِينَ ﴿٩١﴾									
यही लोग	उन के लिए	अज़ाब	दर्दनाक	और नहीं	उन के लिए	कोई	मददगार	91	